वर्ष 26 | अंक 7 | फरवरी 2025

ISSN No. 2582-4546

₹ 50

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

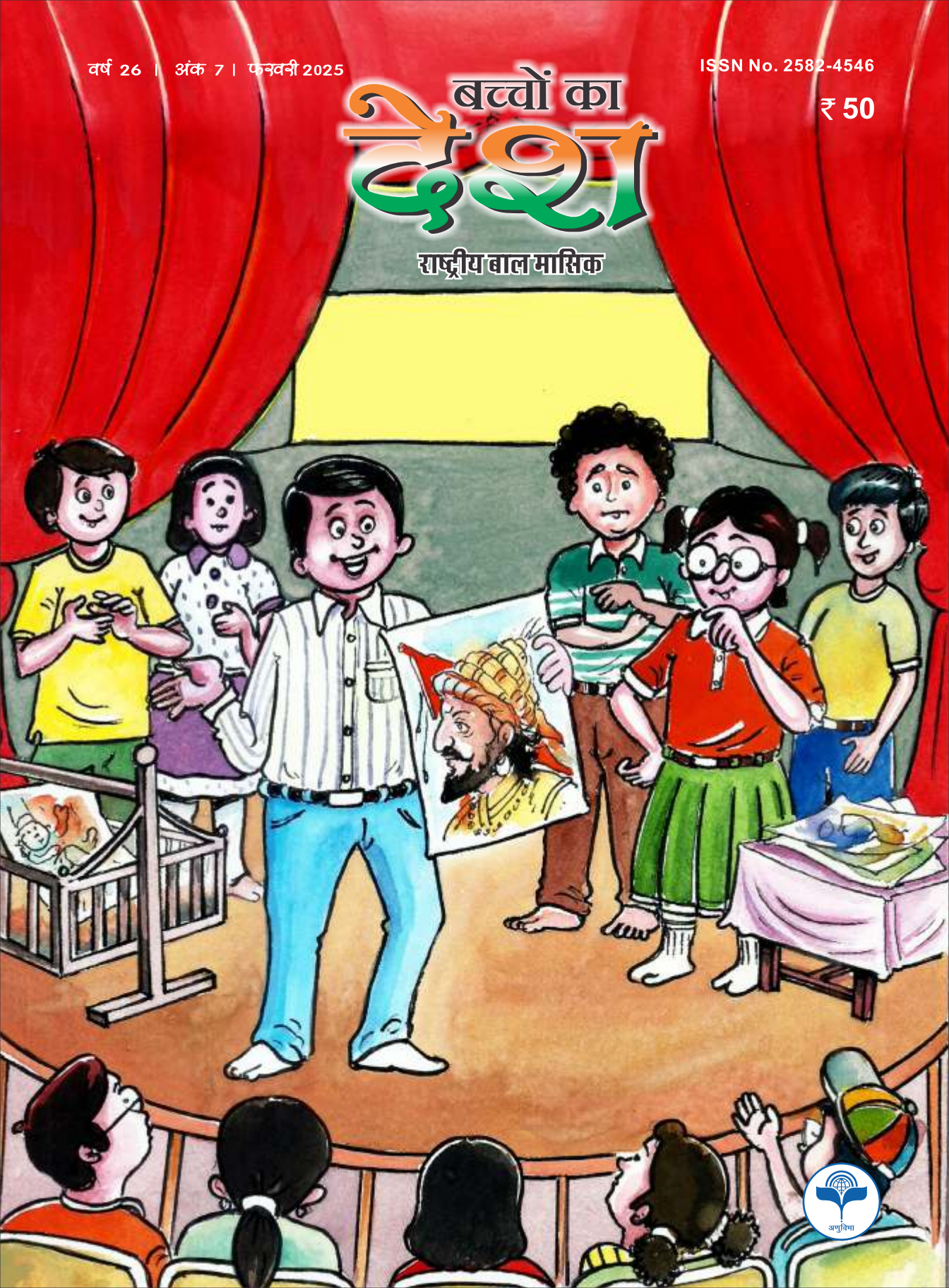

क्या आप जानते हो ?

2 फरवरी से बसंत ऋतु प्रारम्भ हो रही है। छह ऋतुओं में यह सबसे अधिक मनभावन होती है। बाग-बगीचों में रंग-बिरंगे फूल और उन पर मंडराती तितलियाँ, ये दृश्य कितने सुन्दर लगते हैं! तो, आओ जानते हैं कुछ फूलों के बारे में जो आप अपने घर पर भी उगा सकते हैं!

गुलाब - Rose

गुलाब तो फूलों का राजा होता है। इसकी सुगंध सभी को आकर्षित करती है। अपने नाम के अनुरूप ये गुलाबी तो होते ही हैं, लाल, सफेद और पीले गुलाब के फूल भी सुन्दर लगते हैं। गुलाब के फूलों से बनने वाला गुलकंद और गुलाब–जल काफी उपयोग में लिया जाता है।

डहलिया - Dahlia

डहलिया बड़े आकार का आकर्षक फूल है। यह अनेक रंगों और आकारों में पाया जाता है। नीले रंग को छोड़कर दुनिया भर में इसकी विभिन्न रंगों और रूपों बहुत–सी प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

गेंदा - Marigold

गेंदे के फूल की मालाएं तो आपने अवश्य देखी होंगी। शादी, त्योहार या अन्य कार्यक्रमों में इस फूल का काफी उपयोग होता है। ये मुख्य रूप से पीले या नारंगी रंग के होते हैं। इसकी खेती वर्ष भर की जा सकती है।

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 26 अंक : 7 फरवरी, 2025

सम्पादक : संचय जैन
सह सम्पादक : प्रकाश तातेड़
प्रबन्ध सम्पादक : निर्मल राँका, पंचशील जैन
कार्यालय प्रभारी : चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक्स : गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन : दिलीप शर्मा

अध्यक्ष : प्रताप सिंह दुगड़
महामन्त्री : मनोज सिंघवी
कोषाध्यक्ष : राकेश बरड़िया
संयोजक सदस्यता : विनोद बच्छावत
संयोजक विद्यालय सदस्यता : क्षितिज व्यास

प्रकाशक :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
www.anuvibha.org
9414343100, 9351552651

सहयोगी संस्थान :
भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर

- 'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है।
- समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
का
गौरवशाली प्रकाशन
अणुव्रत
बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

सदस्यता फॉर्म

मैं 'अणुव्रत' / 'बच्चों का देश' पत्रिका की सदस्यता लेना चाहता / चाहती हूँ। सदस्यता शुल्क नीचे दिये विवरण अनुसार जमा करा रहा/ रही हूँ -

अवधि	'अणुव्रत'	'बच्चों का देश'
1 वर्ष	₹ 800	₹ 500
3 वर्ष	₹ 2200	₹ 1350
5 वर्ष	₹ 3500	₹ 2100
सोमश्रेणी (15 वर्ष)*	₹ 21000	₹ 15000

बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
IDBI BANK
Branch Rajsamand
A/c No. : 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

नाम .... दिनांक ....
पता ....
पिन .... मोबाइल .... ईमेल ....
'अणुव्रत' ₹ .... एवं 'बच्चों का देश' ₹ .... कुल राशि ₹ .... नगद ☐ बैंक ☐ द्वारा भुगतान किया।

हस्ताक्षर आवेदक   हस्ताक्षर प्राप्तकर्ता

सदस्यता फॉर्म इस पते पर भेजें
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, बॉक्स सं. 28,
राजसमन्द - 313324 (राजस्थान)
मोबाइल : 9414343100, 9116634512

कार्यालय उपयोग हेतु
रसीद संख्या .... दिनांक ....
प्राप्ति दिनांक .... सदस्यता क्रमांक ....
सदस्यता प्रारंभ माह ....

[illegible]

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित।

मैं यहाँ हूँ...

कविता

09 **सभी न होते एक समान**
सुमन पाठक

22 **चिड़िया रानी**
उदय मेघवाल 'उदय'

22 **बच्चों क्या तुम?**
बृजराज किशोर 'राहगीर'

26 **दादा दादी, प्यारे**
किशोर श्रीवास्तव

26 **अगर न होते पेड़ धरा पर**
डॉ. शकुन्तला कालरा

27 **बनाएँ रेल**
रमेशचंद्र पंत

27 **छुट्टी का दिन**
योगीराज योगी

स्तम्भ

05 **प्रेरक वचन**
06 **सम्पादक की पाती**
07 **महाप्रज्ञ की कथाएँ**
18 **दस सवाल : दस जवाब**
28 **नन्हा अखबार**
32 **अन्तर ढूँढ़िये**
37 **परख**
38 **कलम और कूँची**
40 **सुडोकू**
43 **सखियों की बाड़ी**
45 **रंग भरो प्रतियोगिता, उत्तरमाला**

English Section

46 **The Travelers and the Purse**
47 **Tale of a Squirrel and a Cat**
Misna Chanu
49 **The Champion**
Tanvi Kundra
50 **Science of Living : Jeevan Vigyan, Birthday Greeting**
51 **All about Bats**
Swapna Dutta
52 **But Why**
54 **Good Farmer**
56 **Comic : Dr. Benny...**

विविधा

12 **दिमागी कसरत**
प्रकाश तातेड़

14 **अणुव्रत की बात**
मनोज त्रिवेदी

17 **वर्ग पहेली**
राधा पालीवाल

33 **चित्रकथा**
संकेत गोस्वामी

41 **बूझो तो जानें**
कन्हैया साहू 'अमित'

आलेख

10 एंटीराइनम
सीताराम गुप्ता
11 बालक बना महान : खुशवन्त सिंह
30 आखिर युद्ध से क्या मिलता है?
संचय जैन
32 राज्य पक्षी–18 : श्रीमती ह्यूम फीजेन्ट
डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
34 जो जीते हैं जमाने के लिए
शिखर चन्द जैन
42 विश्व विरासत स्थल–14
नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
44 श्रेष्ठ जीवन की ओर
डॉ. मीरा रामनिवास वर्मा

कहानी

08 निभाई जिम्मेदारी
रजनीकान्त शुक्ल
15 तालाब की साक्षी में
डॉ. नरेन्द्र निर्मल
19 महानायक वीर शिवाजी
डॉ. प्रीति प्रवीण खरे
23 जहाँ चाह, वहाँ राह
डॉ. दिनेश पाठक 'शशि'
35 अकेला चना
श्याम नारायण श्रीवास्तव
39 भैया वाला स्टेटस
सुमन ओबेराय

स्वास्थ्य...

महापुरुषों के प्रेरक संदेश

महात्मा गाँधी

यह स्वास्थ्य है जो सच्ची दौलत है, सोने और चाँदी के टुकड़े नहीं।

बिना स्वास्थ्य के जीवन, जीवन नहीं होता, बल्कि यह दु:ख और आलस्य की अवस्था होती है।

अल्बर्ट आइंस्टीन

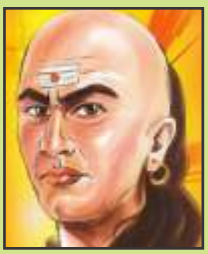

चाणक्य

आवश्यकतानुसार कम भोजन करना ही स्वास्थ्य प्रदान करता है।

अच्छा स्वास्थ्य आन्तरिक शक्ति, शान्त मन और आत्मविश्वास लाता है।

दलाई लामा

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

पिछले दिनों मैं एक स्कूल में कुछ बच्चों से बात कर रहा था। इन दिनों बच्चे परीक्षा की तैयारी में लगे थे। बात-बात में ही एक प्रश्न उठा- क्या परीक्षा को लेकर मन में तनाव होना अच्छा है या नुकसानदायक ? कुछ बच्चों की राय थी कि तनाव होना चाहिए और कुछ ने कहा कि तनाव नहीं होना चाहिए! बातचीत आगे बढ़ी तो दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी बात के समर्थन में मजबूत तर्क भी दिए।

बातचीत का अन्तिम परिणाम यह रहा कि दोनों पक्षों ने यह स्वीकार किया कि उनमें से कोई भी पक्ष न पूरी तरह सही है और न ही पूरी तरह से गलत। सभी इस निष्कर्ष पर सहमत थे। बच्चों ने माना कि यदि बिलकुल भी तनाव नहीं होगा, यानी पढ़ाई और परीक्षा के प्रति यदि मन में बिलकुल भी चिन्ता नहीं होगी तो फिर कोई मेहनत ही नहीं करेगा। जो-जैसे नम्बर आ गए, ठीक है! पास हुए या फेल, कोई परवाह नहीं! इसलिए, थोड़ा तनाव तो होना चाहिए।

साथ ही, सब बच्चे इस बात से भी सहमत थे कि परीक्षा का तनाव इतना भी नहीं होना चाहिए कि शांत मन से पढ़ाई ही न कर सकें। एकाग्रता के साथ पढ़ने में ही मुश्किल होने लगे और प्रश्नों का उत्तर आते हुए भी परीक्षा देते वक्त सब कुछ भूल जाएँ! परीक्षा का इतना तनाव किस काम का कि यदि अच्छे नम्बर न आए, स्कूल टॉप न किया- तो बच्चे को लगने लगे कि अब मित्रों को, माँ-बाप को मुँह कैसे दिखाऊँगा! ऐसा तनाव तो जानलेवा भी हो सकता है।

तनाव एक सीमा में ही अच्छा है- इस पर सब एकमत होने के बाद चर्चा का विषय यह बन गया कि तनाव को सीमित रखने के लिए क्या किया जाना चाहिए ? इस प्रश्न के जवाब में भी बच्चों ने बहुत काम की बातें बताईं। किसी ने कहा- नियमित पढ़ाई जरूरी है, किसी ने समय पर सोने और समय पर उठने की आदत को महत्त्वपूर्ण बताया तो किसी ने गुस्सा और झगड़ा न करने की सलाह भी दी। एक बच्चे ने कहा कि मोबाइल पर इधर-उधर के वीडियो देखने में समय नहीं गँवाना चाहिए।

मैंने उस बच्चे से पूछा कि वह रोज कितनी देर वीडियो देखता है ? थोड़ा मुस्कराते हुए, कुछ शरमाते हुए और नीचे देखते हुए वह बोला- दो-तीन घंटे। मैंने पूछा- क्या इतना समय बिताना सही है ? बोला- सही तो नहीं है, कम करूँगा।

उस बच्चे के उदाहरण से अब एक नया प्रश्न उपस्थित हो गया- हम जानते तो हैं कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं लेकिन वैसा करते क्यों नहीं हैं ?

समय हो गया था इसलिए उस दिन तो बच्चों से इस प्रश्न का उत्तर नहीं पा सका। हाँ, अगली बार इस प्रश्न पर उनसे अवश्य बात करूँगा। तब तक आपके पास भी इसका कोई जवाब हो तो मुझे जरूर लिख भेजें।

हाँ, परीक्षा के लिए पूरी तैयारी करें, नियमित पढ़ें लेकिन जरूरत से ज्यादा तनाव न पालें! बहुत-बहुत शुभकामनाएँ!

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

चरित्र-निर्माण

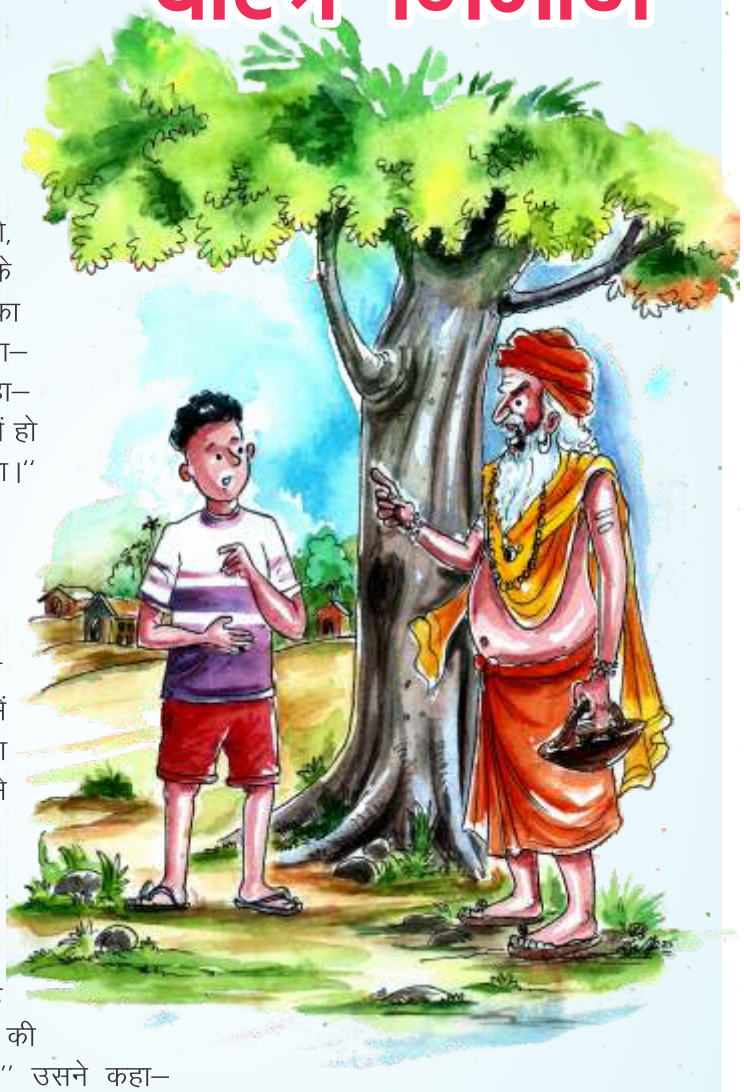

एक ऋषि ने एक लड़के को देखा। वह बहुत ही उद्दण्ड लग रहा था। उन्होंने उसके आचरण को देखा और पूछा– ''बताओ, तुम किसके लड़के हो?'' लड़के ने कहा– ''मैं सावलक का लड़का हूँ।'' ऋषि ने पूछा– ''तुम्हारी माता?'' उसने कहा– ''कौशल।'' ऋषि बोला– ''नहीं हो सकता, ऐसा हो नहीं सकता।'' अब निर्णय कौन करे? लड़का कहता है कि मेरे माता–पिता ये हैं और ऋषि कह रहा है कि तुम्हारे माता–पिता ये नहीं हैं। बहुत बड़ा आरोप है। लड़के के मन में उलझनें भर गई। बड़ा चिन्तित–सा हो गया। उसे ऋषि पर गुस्सा भी आया।

वह दौड़ता हुआ, माता–पिता के पास पहुँचा। जाकर बोला– ''बताओ, मैं किसका बेटा हूँ?'' ''अरे! यह क्या प्रश्न? यह भी कोई पूछने की बात है! हमारे बेटे हो तुम।'' उसने कहा– ''सही–सही बताओ, नहीं तो .....।'' माता–पिता ने सोचा, यह तो अच्छी मुसीबत आ गयी। पता नहीं यह प्रश्न किसने खड़ा कर दिया। आखिर उसने बहुत ही उग्र रूप धारण कर लिया, तब वे बोले– ''तुम शिकारी के लड़के हो।'' ''तो फिर यहाँ कैसे आ गया?'' लड़के ने पूछा। पिता ने कहा– ''अनाथ हो गए थे, तुम्हारी रक्षा के लिए कोई नहीं रहा और ऐसा संयोग मिल गया कि हमने तुम्हारा पालन–पोषण किया इसलिए तुम हमारे लड़के बन गए।''

कथाबोध : व्यक्ति के आचरण पर उसके माता–पिता के गुण–अवगुणों का गहरा प्रभाव होता है। इसमें कुछ योग वातावरण का भी होता है।

निभाई जिम्मेदारी

मणिपुर की राजधानी इंफाल के बाहेंगबम लेकई गाँव में शान्ति नाम की महिला के घर एक रिश्तेदार आई हुई थी जिनके साथ शान्ति को अपने धान के खेत देखने के लिए जाना था। उस महिला रिश्तेदार के साथ उसका बारह साल का बच्चा संजीव भी था।

संजीव चलने–फिरने से असमर्थ था। उसे खेत पर ले जाने का कोई साधन उनके पास नहीं था। शान्ति का नौ साल का बेटा राहुल घर पर ही था। संजीव उसके साथ घर पर रहने के लिए मान गया। इस तरह संजीव और राहुल को घर पर छोड़कर शान्ति अपनी महिला रिश्तेदार के साथ खेतों की ओर निकल गई।

घर पर अकेले रह गए संजीव और राहुल आपस में खेलने लगे। बच्चों को भाग–दौड़ के खेल सबसे ज्यादा पसन्द आते हैं। पर चूँकि संजीव चलने–फिरने में असमर्थ था इसलिए राहुल उसके साथ बैठकर खेले जाने वाले खेल खेलने लगा। वे काफी देर तक खेलते रहे। अचानक राहुल की निगाह घर के एक ओर उठने वाली आग की लपटों की ओर गई। अब तक आग ने तेजी पकड़ ली थी।

वह खेल छोड़कर उठ बैठा और तेजी से आग की ओर बढ़ा। मगर नौ साल का नन्हा राहुल अकेले दम पर उस भयंकर बढ़ती जा रही आग को बुझा पाने में समर्थ नहीं था। संजीव चल नहीं सकता था इसलिए उसे अकेला वहाँ छोड़कर बाहर से किसी को बुलाने नहीं जा सकता था।

क्या करे? क्या करे? ऐसे में उसे एक उपाय सूझा। उसने तुरन्त वहीं पास में किचन में रखी कलछी और थाली को उठाया और कलछी से पीट–पीटकर थाली को जोर–जोर से बजाने

देखें पृष्ठ 13...

सभी न होते एक समान

हाथी बहुत बड़ा होता है,
चूहा होता छोटा।
चमगादड़ दुबला-पतला है,
भालू बहुत ही मोटा।

कोयल गाती है अच्छा तो,
रंग दे दिया काला।
बगुले के मन में रहता छल,
रंग है उसका आला।

मोर नाचता है अच्छा तो,
साँपों को खाता है।
माँ यह जग का खेल मुझे तो,
समझ नहीं आता है।

ईश्वर सबको सदा एक-सा,
माँ क्यों नहीं बनाते।
अलग-अलग गुण देकर सबको,
कैसा जाल बिछाते।

माँ पर मुझको थोड़ा-थोड़ा,
भेद समझ आता है।
मिलकर रहे सभी आपस में,
सबका सबसे नाता है।

सब में कुछ अवगुण होते हैं,
गुण भी होते बड़े महान।
इसीलिए सब अलग-अलग हैं,
सभी ना होते एक समान।

सुमन पाठक
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

एंटीराइनम
एक आकर्षक डरावना फूल

फूल सबको आकर्षित करते हैं क्योंकि फूलों में महक के साथ–साथ आकर्षक रंग भी होते हैं लेकिन कुछ फूलों में महक और रंग तो होते हैं लेकिन उनका आकार बहुत आकर्षक नहीं होता। ऐसा ही एक फूल है एंटीराइनम अथवा स्नैपड्रैगन। इसका वैज्ञानिक नाम है एंटीराइनम मेजस। इसे डॉग फ्लावर, ड्रैगन फ्लावर, स्नैपड्रैगन फ्लावर, डॉग्स माउथ, लायंस माउथ आदि नामों से भी जाना जाता है।

स्नैपड्रैगन स्कल फ्लावर : इसका आकार ड्रैगन की खोपड़ी जैसा होता है। इसके पौधों पर फूल बेहद खूबसूरत दिखते हैं। ये सफेद, लाल, पीले, गुलाबी, नारंगी और बैंगनी जैसे कई आकर्षक रंगों में मिलते हैं। इन रंगों में भी पर्याप्त विविधता पाई जाती है। कुछ फूलों की पंखुड़ियों पर दूसरे रंगों की चित्तियाँ भी देखी जा सकती हैं।

स्नैपड्रैगन के फूल आम तौर पर सर्दी व उसके बाद वसंत ऋतु में ही खिलते हैं। गर्मी बढ़ने पर फूल खिलने बन्द हो जाते हैं। इन्हें बीज अथवा कटिंग दोनों प्रकार से लगाया जा सकता है। एंटीराइनम के बीज उगने में दो से तीन सप्ताह का समय लेते हैं और उसके दो महीने के बाद इन पर फूल खिलने प्रारम्भ होते हैं।

एंटीराइनम अथवा स्नैपड्रैगन के फूल पौधे के डंठल के निचले भाग से खिलना प्रारम्भ होते हैं जो क्रमशः ऊपर की ओर बढ़ते रहते हैं। इस प्रकार से ये पोधे कई सप्ताह तक फूलों से लदे रहते हैं और बहुत सुन्दर लगते हैं। बच्चे इन फूलों को विशेष रूप से पसन्द करते हैं क्योंकि इन फूलों को पीछे से हलका–सा दबाने पर ये कुत्ते के मुँह की तरह खुल जाते हैं। इसीलिए इन्हें डॉग फ्लावर अथवा कुत्ता फूल के नाम से भी जाना जाता है।

जब स्नैपड्रैगन अथवा डॉग फ्लावर पौधे पुराने पड़ जाते हैं और उनकी पत्तियाँ गिर जाती हैं तो उनका रूप बदलने लगता है। स्नैपड्रैगन के फूलों की पंखुड़ियाँ झरने के बाद जब उनमें बीज बनने के बाद बीज निकल जाते हैं तो उनका आकार बिलकुल ड्रैगन के चेहरे अथवा इनसान की पुरानी खोपड़ी जैसा दिखाई देने लगता है।

वास्तव में इन खूबसूरत फूलों से डरने की कोई आवश्यकता नहीं। इनके खोपड़ीनुमा खोल से सावधानीपूर्वक इनके नन्हे–नन्हे बीज निकालकर और अच्छी तरह से सुखाकर रख लीजिए ताकि अगले साल फिर से इन्हें उगाकर अपनी बालकनी अथवा लॉन की सुन्दरता बढ़ाई जा सके।

सीताराम गुप्ता,
दिल्ली

बालक बना महान

लेखक, पत्रकार एवं चिन्तक

खुशवन्त सिंह

कहते हैं– 'हीरे को तराशा जाता है, तभी वह अनमोल बनता है।' यही बात व्यक्ति विशेष पर भी लागू होती है। खुशवन्त सिंह ने अपनी प्रतिभा एवं विशिष्टताओं को अनेक क्षेत्रों में विकसित किया जिससे वे लेखक, वकील, राजनयिक, पत्रकार एवं राजनेता बनकर देश की सेवा कर सके।

खुशवन्त सिंह का जन्म गाँव हदाली जिला खुशाब (अविभाजित पंजाब) में 2 फरवरी 1915 को हुआ। इनके पिता का नाम सर शोभा सिंह था जो दिल्ली के प्रमुख बिल्डर थे। इनका जन्म नाम खुशाल सिंह था जो इनकी दादी ने रखा था। स्कूल में इन्हें 'शाली' नाम से पुकारा जाता था। उनके साथी इस नाम की मजाक बनाते तब स्वयं खुशाल सिंह ने अपना नाम बदल कर खुशवन्त सिंह रख लिया।

शिक्षा व आजीविका

उन्होंने सन 1920 में दिल्ली मॉडर्न स्कूल में प्रवेश लिया और दस वर्ष तक वहाँ पढ़ाई की। उन्होंने लाहौर से बी. ए. तथा लन्दन विश्वविद्यालय से कानून की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने 1939 में लाहौर में एक वकील के रूप में पेशेवर जीवन की शुरुआत की। आजादी के बाद खुशवन्त सिंह ने भारतीय विदेश सेवा में प्रवेश किया। चार साल बाद वे ऑल इंडिया रेडियो में पत्रकार बने। आपने यूनेस्को में भी कार्य किया। 1951–53 तक सरकार की पत्रिका 'योजना' के सम्पादक रहे। 1978 में सेवानिवृत्त होने से पहले उन्होंने द नेशनल हेराल्ड, हिन्दुस्तान टाइम्स एवं द इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया जैसे प्रसिद्ध समाचार पत्रों में सम्पादकीय दायित्व सँभाला।

मौलिक विचारक एवं चिन्तक

खुशवन्त सिंह एक स्वतन्त्र चिन्तक एवं मौलिक विचारक थे। वे अध्ययनशील थे। लेखन कार्य में व्यस्त रहते थे। उनका नास्तिकता की ओर झुकाव रहा। वे जाति व्यवस्था और संगठित धर्म के खिलाफ थे। वे कहते थे– मेरे व्यक्तिगत धर्म में कोई ईश्वर नहीं है। स्वर्ग–नरक और पुनर्जन्म में उनका विश्वास नहीं था। उनकी अन्तिम पुस्तक 'द गुड, द बैड एंड द रिडिकुलस' का प्रकाशन 1984 में हुआ था जिसमें धर्म के सम्बन्ध में उनका चिन्तन अंकित था।

साहित्यिक यात्रा

खुशवन्त सिंह मुख्यतः कथाकार थे। उपन्यास व कहानियों के क्षेत्र में उनका

महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने व्यंग्य–विनोद युक्त लेखन भी किया। उनके संस्मरण एवं आत्म कथा को भी प्रसिद्धि मिली। सिक्खों का इतिहास उनकी ऐतिहासिक कृति है। उनकी अन्य प्रसिद्ध पुस्तकों में दिल्ली, पाकिस्तान मेल, टाइगर–टाइगर, बोलेगी न बुलबुल अब, मेरी दुनिया मेरे दोस्त उल्लेखनीय है।

सिंह की एक पुस्तक 'ट्रेन टू पाकिस्तान' बेहद लोकप्रिय हुई, इस पर एक फिल्म भी बनी। भारत के साथ–साथ पाकिस्तान में भी लोग उन्हें पसन्द करते थे। उन्होंने अपना जीवन एक जिन्दादिल इनसान की तरह व्यतीत किया।

राजनेता बने

खुशवन्त सिंह 1980 से 1986 तक भारत की राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे। देश सेवा के लिए 1974 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। वर्ष 2007 में खुशवंतसिंह को पद्म विभूषण सम्मान प्राप्त हुआ। उन्होंने इन्दिरा गाँधी द्वारा घोषित आपातकाल (इमरजेंसी) का खुलकर समर्थन किया। इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद हुए सिख विरोधी दंगों के बाद उनका राजनीति से मोहभंग हो गया।

देहावसान

खुशवन्त सिंह ने अपनी जिन्दगी के आखिरी पड़ाव तक भी लिखना नहीं छोड़ा। वे सुबह 4 बजे उठकर लिखने बैठ जाते थे। वे प्रकृति प्रेमी थे और घंटों बगीचों में बैठते थे। उन्हें दिल्ली और लेखन से अत्यधिक लगाव रहा।

खुशवन्त सिंह का 99 वर्ष की आयु में 20 मार्च 2014 को दिल्ली स्थित उनके आवास पर निधन हो गया। देश के सर्वोच्च पदासीन व्यक्तियों ने उनके सम्मान में शोक संदेश जारी किये।

हिन्दी व अंग्रेजी शब्दों का सही जोड़ा बनाओ।

क्रमांक	अंग्रेजी शब्द	क्रमांक	हिन्दी शब्द
1.	Doctor	A.	न्यायालय
2.	Pen	B.	मक्खन
3.	Dustbin	C.	रक्तचाप
4.	Fee	D.	महाविद्यालय
5.	Butter	E.	अनुत्तीर्ण
6.	Salary	F.	शुल्क
7.	Hospital	G.	प्रार्थना पत्र
8.	Blood Pressure	H.	वेतन
9.	Court	I.	दूरभाष
10.	News Paper	J.	चिकित्सक
11.	College	K.	आरक्षण
12.	Jail	L.	प्रशिक्षण
13.	Fail	M.	समाचार पत्र
14.	Reservation	N.	कलम
15.	University	O.	कचरा पात्र
16.	Telephone	P.	कारागृह
17.	Application	Q.	चिकित्सालय
18.	Training	R.	विश्वविद्यालय

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

''निभाई जिम्मेदारी' पृष्ठ 9 का शेष....

लगा। उसने सोचा कि उसकी आवाज सुनकर लोग उसकी मदद के लिए आ जाएँगे। मगर काफी देर तक थाली बजाने के बावजूद जब कोई उसकी मदद के लिए नहीं आया तो वह निराश हो गया। मगर उसने हिम्मत नहीं हारी।

आखिरकार कोई उपाय न देखकर उसने संजीव को अपनी पीठ पर लादकर बाहर ले जाने की सोची। इसके अलावा अन्य कोई उपाय भी नहीं था क्योंकि आग बड़ी तेजी से उनकी ओर बढ़ती जा रही थी। अगर जल्दी ही कुछ न किया गया तो वे आग की लपटें संजीव को अपने चँगुल में फँसा लेंगी। आखिर उसकी माँ शान्ति ने उस पर भरोसा करके संजीव की देखभाल की जिम्मेदारी देकर उसे घर पर छोड़ा था। वह छोटा है तो क्या हुआ? अपनी जिम्मेदारी हर हाल में निभाएगा।

राहुल ने संजीव को अपनी पीठ पर लादा और उसे उठाने की कोशिश की। मगर संजीव बारह साल का वजनदार उससे बड़ा लड़का था और राहुल सिर्फ नौ साल का। उसके पाँव लड़खड़ा गए। मगर अपने मन को मजबूत करके उसने एक बार फिर से उसे उठाया और दरवाजे से बाहर की ओर चल दिया।

उसके पाँव लड़खड़ा रहे थे मगर फिर भी उसने हिम्मत करके जैसे–तैसे आगे बढ़ना जारी रखा। इधर आग ने तेजी पकड़ ली थी। बाहर निकलने वाला रास्ता भी आग की चपेट में आ चुका था। ऐसे में बचते–बचाते भी आग कहीं–कहीं राहुल और संजीव को कपड़ों को छू गई। मगर हौसला रखते हुए राहुल घर के आँगन तक पहुँच गया।

अब तक आग की लपटें दूर–दूर तक दिखाई देने लगी थी जिन्हें देखकर कई पड़ोसी दौड़कर आ गए। जब उन्होंने राहुल को इस तरह संजीव को अपनी पीठ पर लादे हुए आग से बाहर निकलते देखा तो वे हैरान रह गए। वे लोग दौड़कर आगे आए और उन्होंने राहुल और संजीव के पास पहुँचकर उनके कपड़ों में लगी आग को बुझाया और उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया।

वे सभी लोग एक साथ मिलकर घर में लगी आग को बुझाने में लग गए। उधर जब शान्ति को खबर लगी तो वह दौड़ती हुई घर आई। उसने दोनों बच्चों को सुरक्षित देखा और जब उसे पूरी घटना का पता लगा तो उसने अपने प्यारे नन्हे राहुल को गले से लगा लिया। नन्हे राहुल ने अपनी जान की बाजी लगाकर उनकी दी हुई जिम्मेदारी को पूरा किया था।

जिसने सुना, उसने राहुल की हिम्मत, हौसले और सूझबूझ की सराहना की। राहुल की बहादुरी और साहस की यह घटना अखबारों में प्रकाशित हुई। देश के प्रधानमंत्री ने गणतन्त्र दिवस पर राहुल को वर्ष 2004 का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

वह क्या है जो भूमि में पैदा होने वाला फल है?

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

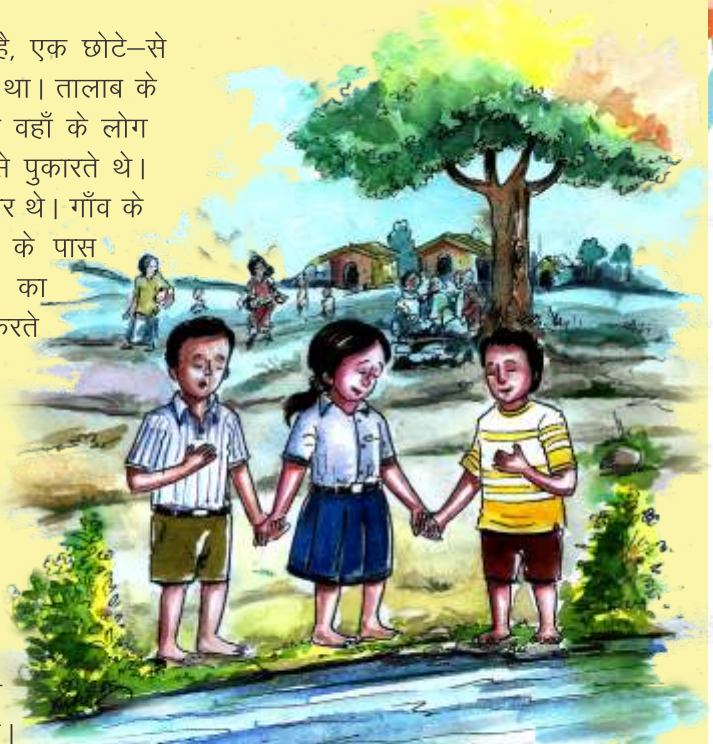

तालाब की साक्षी में

एक बार की बात है, एक़ छोटे–से गाँव में एक सुन्दर–सा तालाब था। तालाब के चारों ओर हरे–भरे पेड़ थे और वहाँ के लोग उसे 'अपना तालाब' के नाम से पुकारते थे। यहाँ के लोग बहुत ही मिलनसार थे। गाँव के लोग हर रविवार को तालाब के पास एकत्र होते, वहाँ नहाते, तैरने का आनन्द लेते और मौज–मस्ती करते हुए एक–दूसरे से अपनी खुशियाँ और दुःख बाँटते।

गाँव में एक खुशमिजाज लड़का था जिसका नाम सुन्दर था। सुन्दर हमेशा अपने दोस्तों के साथ तालाब के किनारे खेलता, नहाता और तैरने का आनन्द लेता। बालिका सुनहरी अपनी माँ के साथ तालाब पर आती। उसकी माँ तालाब से थोड़ी दूर कपड़े धोने के स्थान पर कपड़े धोती और सुनहरी उसे बाल्टी में पानी ले जाकर देती। फिर माँ की उपस्थिति में तैरने का अभ्यास करती। प्रकाश खेलों में आगे रहने वाला लड़का था और वह रोज ही उस तालाब के आर–पार तैर कर अपनी तैराकी के अभ्यास को बढ़ाता जाता। इसी तालाब पर धीरे–धीरे तीनों की दोस्ती हो गयी। सुन्दर, प्रकाश और सुनहरी आपस में पढ़ाई और स्कूल की बातें करते।

एक दिन सुनहरी ने पूछा– ''बताओ दोस्तो! तालाब का पानी सदा एक–सा रहता है या इसमें कुछ परिवर्तन होता रहता है।'' प्रकाश ने कहा– ''इसमें कभी–कभी लहरें उठती हैं, इससे जल स्वच्छ होता है और उसमें ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है, जो मछलियों के जीवन के लिए भी जरूरी है।'' सुनहरी ने कहा– ''धूप और काम में लेने के कारण इसका जल स्तर कम होता जाता है जो अगली बारिश में फिर सामान्य हो जाता है।'' सुन्दर ने कहा– ''यह हमारे वातावरण में नमी बनाये रखने में सहायक होता है।'' प्रकाश ने कहा– ''जब यह तालाब हमें और समाज को बिना कहे इतना कुछ देता है तो हमें भी जीवन में कुछ लक्ष्य बनाने चाहिए और समाज के विकास में सहयोग करना चाहिए।''

बच्चों ने आँखें बन्द की और एक–दूसरे का हाथ थामकर मन ही मन कुछ लक्ष्य सोचे। फिर उन्होंने आँखें खोलीं। सुन्दर

ने कहा कि वह धावक बनेगा और भारत का नाम खेलों की दुनिया में रोशन करेगा। सुनहरी ने कहा कि वह एक दिन गाँव की सरपंच बन कर गाँव में विकास के काम करना चाहती है। प्रकाश ने इच्छा की कि गाँव में सभी बच्चे खुशी से रह सकें और कभी लड़ाई–झगड़ा न करें। वह समाज सेवा की राह चुनना चाहता है।

फिर तीनों ने एक साथ कहा– ''हे तालाब, तुम आज साक्षी हो और तुमने हम तीनों की इच्छाएँ सुन ली होगी।'' जब वे यह कह चुके तो उन्हें लगा जैसे तालाब ने कहा हो कि बच्चो, याद रखो, इच्छाएँ पूरी करने के लिए मेहनत और सच्चाई की जरूरत होती है। अगर तुम अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो, तो तुम्हें परिश्रम और लगन से काम करना होगा।

बच्चों ने आपस में एक दूसरे की बातों को समझा और तय किया कि वे अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए हर सम्भव कोशिश करेंगे। सुन्दर दौड़ने का नियमित अभ्यास करने लगा, सुनहरी गाँव के लोगों के छोटे–छोटे काम करने लगी और प्रकाश गाँव के बच्चों को एकजुट करने के लिए खेलों का आयोजन करने लगा।

समय बीतने लगा और तीनों बच्चों ने कड़ी मेहनत की। सुन्दर ने दौड़ने का खूब अभ्यास किया और कई बार रेस जीते। सुनहरी की समाज सेवा से गाँव वाले बहुत खुश रहने लगे। सुनहरी हर एक की समस्या सुनती, उन्हें एक कागज पर लिखती और सम्बन्धित अधिकारियों तक स्वयं देने जाती। प्रशासन और गाँव में उसे सभी लोग व्यक्तिगत रूप से जानने लगे थे और उसके काम और सहयोग की प्रशंसा करते। प्रकाश ने गाँव के बच्चों में दोस्ती और सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया और सभी बच्चे खुशी–खुशी रहने लगे।

इस समय तक वे सभी युवा हो चुके थे और अपने–अपने क्षेत्र में नाम कमाने लगे थे। कई महीनों बाद, एक दिन फिर से सुन्दर, सुनहरी और प्रकाश तालाब के पास गए। उन तीनों ने ऊँचे स्वर में एक साथ कहा– ''हे तालाब, तुम साक्षी हो कि हमने तुम्हारी उपस्थिति में कुछ लक्ष्य तय किए थे। हम तीनों ने अच्छी प्रगति की है। हमारी प्रेरणा तुम्ही हो क्योंकि तुम चुपचाप हम सब को कुछ न कुछ देते ही रहते हो। हम तीनों तुम्हें अपना धन्यवाद अर्पित करते हैं।'' उन्हें मन ही मन लगा कि शायद तालाब ने उनकी बात सुन ली है।

गाँव वापस लौटते हुए सुन्दर, सुनहरी और प्रकाश ने एक–दूसरे को देखा और समझ गए कि सच्ची खुशियाँ खुद को साबित करने में और एक–दूसरे का साथ देने में है। उन्होंने प्रण लिया कि वे हमेशा एक–दूसरे की सहायता करेंगे और गाँव में खुशियाँ फैलाते रहेंगे।

इस प्रकार सुन्दर, सुनहरी और प्रकाश की कहानी ने गाँववासियों के जीवन को सकारात्मकता और प्रेरणा से भर दिया। गाँव का तालाब मित्रता, मेहनत और सच्ची खुशियों का प्रतीक बन गया था। बच्चे उसकी कहानी सुनकर प्रेरित होते थे और बड़े होने पर अपनी मेहनत और लगन से अपने सपनों को सच करने का प्रयास करते थे।

डॉ. नरेन्द्र निर्मल
कांकरोली (राजस्थान)

वह क्या है जिसमें अँगुली है, अँगूठा है, कलाई व हथेली भी है, मगर हड्डी व माँस नहीं है ?

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

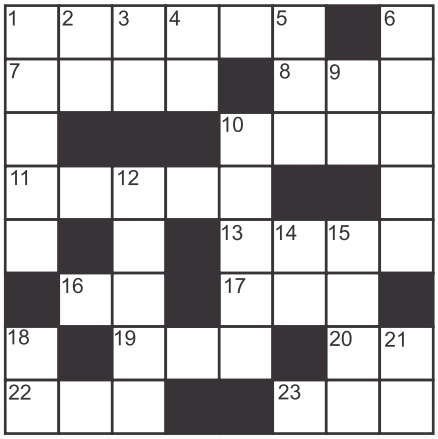

बाएँ से दाएँ :

1. दीपावली पर सफाई हेतु करते हैं (3,3)
7. भूना हुआ चावल जिससे भेल बनती है (4)
8. मेघ, वारिद, जलद, घन (3)
10. एक औषधि गुण वाला जमीकन्द (4)
11. हवन के लिये बना स्थान, चंदोबा (5)
13. अप्रिय, असहनीय (4)
16. माथा, ललाट, मस्तक (2)
17. सतह, ऊपरी आवरण (3)
19. गाने का कार्य, गाना (3)
20. हमेशा, नित्य, प्रतिदिन (2)
22. सोचना, विचारना (3)
23. यदि, परन्तु, एक सुगंधित द्रव्य(3)

ऊपर से नीचे :

1. वह साल जिसमें फरवरी 29 दिनों की हो (5)
2. पंख, किन्तु, अगर (2)
3. सम्बोधन का शब्द, पुकारने का शब्द (2)
4. अँग्रेजी में खम्भा (2)
5. जो पारी समाप्ति तक आउट न हो (3)
6. प्रधानमन्त्री मोदी जी को कुवैत का सर्वोच्च सम्मान जो हाल ही में मिला (2,3)
9. दाम, भाव, द्वार, दरवाजा (2)
10. अपनत्व, ममता (5)
12. शुभ अवसरों पर गाने वाले गीत (3, 2)
14. परन्तु, यदि (2)
15. गैस से होने वाली बीमारी(4)
18. संध्या, साँझ (2)
21. धन, सम्पत्ति, माल, जमीन (2)

उत्तर इसी अंक में

कबीर वाणी...

प्रेम न बारी उपजे, प्रेम न हाट बिकाए।
राजा प्रजा जो ही रुचे, सिस दे ही ले जाए।

कबीरदास जी कहते हैं कि प्रेम कहीं खेतों में नहीं उगता और न ही प्रेम कहीं बाजार में बिकता है। चाहे राजा हो या प्रजा, अर्थात साधारण जनता, कोई भी यदि प्रेम पाना चाहता है तो वह अहंकार को त्याग कर ही मिलेगा।

(1) ऊपर दिये गये राष्ट्रीय ध्वज किन देशों के है?

(2) विश्व का सबसे छोटा देश कौन सा है?

(3) किस देश में सबसे अधिक प्राकृतिक झीलें हैं?

(4) विश्व में सबसे बड़े द्वीप का क्या नाम है?

(5) सहारा रेगिस्तान किस देश में स्थित है?

(6) मृत सागर किन दो देशों के बीच स्थित है?

(7) विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा किस स्थान पर है?

(8) दुनिया में सबसे ऊँचा जल प्रपात कहाँ है?

(9) किस देश को 'सूर्योदय का देश' कहते हैं?

(10) कुवैत की राजधानी कहाँ है?

उत्तर इसी अंक में

जरा हँस लो

- दो व्यक्ति आकाश की तरफ देखकर दिन में बहस कर रहे थे। एक बोल रहा था कि वो सूरज है, एक बोल रहा था कि वो चन्द्रमा है...
  तीसरा व्यक्ति – क्या बात है?
  तुम्ही बताओ वह चन्द्रमा है या सूरज?
  तीसरा व्यक्ति – मुझे क्या मालूम, मैं तो परदेसी हूँ। यहाँ पर आज ही आया हूँ।

- बाहर से आए एक व्यक्ति ने कहा – आपके गाँव में कुत्ते बहुत हैं। हम आते हैं तो वे भौंकने लगते हैं।
  गांववासी ने कहा – जो कुत्ते भौंकते हैं वो काटते नहीं, डरने की जरूरत नहीं।
  मेहमान ने कहा– ये कब भौंकना बन्द कर दें और काटना चालू कर दें, इनका क्या भरोसा?

नाटिका

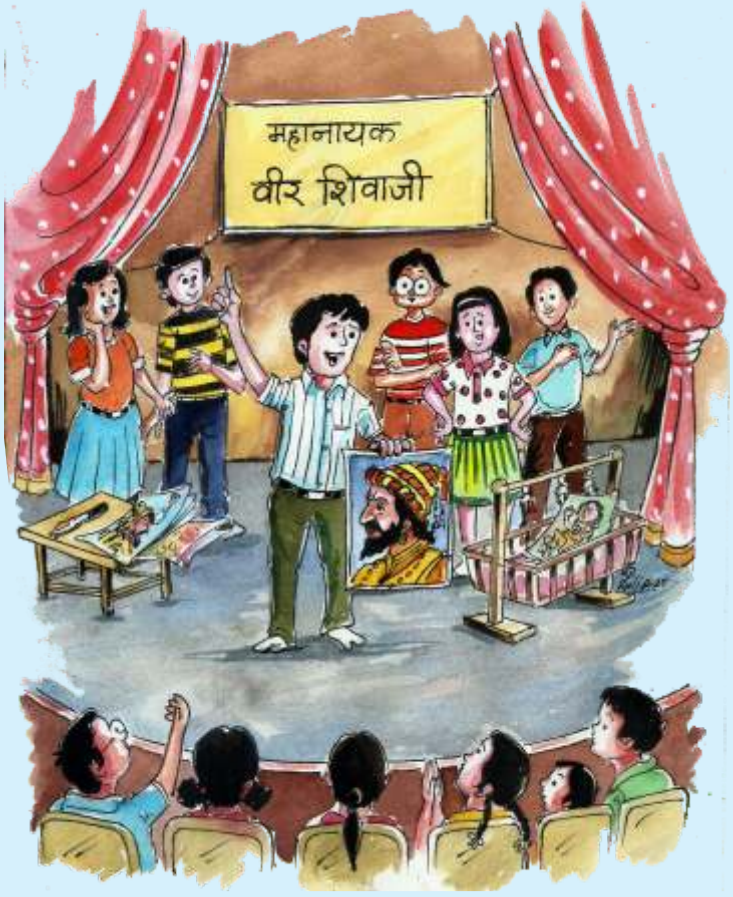

महानायक वीर शिवाजी

पात्र परिचय : निठल्ला, रसगुल्ला, चमेली, जलेबी, बतरस, अलबेला, सभी 12, 15 वर्ष उम्र के बच्चे।

दृश्य : एक

(क्लब हाउस का दृश्य। जहाँ बतरस पुंगी बजाते हुए गीत गा रहा है। आवाज़ सुनकर निठल्ला, रसगुल्ला, चमेली और जलेबी दौड़े आते हैं।)

रोचक देखो खेला,
बता रहा अलबेला।
मैं हूँ उसका चेला,
गप–गप खाता केला।
बहा पसीना रेला,
सुबह–सुबह की बेला।
हाथ नहीं है धेला,
दुख को कबसे झेला।
चला–चला कर ठेला,
बतरस रेलम पेला।

(मंच पर अलबेला रंगीन चित्रों से खेल दिखाने के लिए तैयार है।)

बतरस : तो लीजिये! मजेदार खेला लेकर आ रहे हैं अलबेला।

अलबेला : मेहरबान, क़द्रदान...दूर हमें जाना है। जहाँ दिखेंगे राजा–रानी, घोड़े, हाथी, महल और सिंहासन।

निठल्ला : और बच्चे?

बतरस : वो भी दिखेंगे। इसी बात पर बजाओ ताली। (बच्चे ताली बजाते हैं) ये हुई न बात।

अलबेला : दर्शको! एक समय की बात बताता... पास पुणे के स्थित शिवनेरी दुर्ग था सबको भाता। पिता शहाजीराजे भोंसले और माता जीजाबाई के घर जन्मा बालक एक सुहाता।

बतरस : इस चित्र को ध्यान से देखो बच्चो!

अलबेला : माता प्रिय पुत्र शिवा को पालने में थीं झुलाती।

निठल्ला : देखो! वह हँस रहा है।

अलबेला : बालक के जन्म पर चारों ओर बँटी

मिठाई। सबने ढेरों खुशी मनाई।

बतरस : वाह जी!

अलबेला : दर्शको! कुछ समय पश्चात बालक संग मित्रों के खिलखिलाते।

बतरस : अजी कौन बालक?

अलबेला : अपने शिवा ठुमकते दौड़ लगाते।

बतरस : अहा! अति सुंदरम।

अलबेला : शिवा बाबू दिन भर खेलें छुपन छुपाई।

निठल्ला : अजी, खेलना किसे नहीं पसन्द! जो आलसी टट्टू होगा उसे ही ना होगा पसन्द... क्यों जलेबी?

जलेबी : तुमने तो मेरे मुँह की बात छीन ली।

अलबेला : शिवा बड़ा था चतुर सुजान। चुटकी बजा–बजा सब लेता जान।

जलेबी : ऐसा क्या!!

अलबेला : जीजा माता पांडु पुत्र भीम तथा राणा प्रताप की सुना रही थी कहानी। उनके पराक्रम की महिमा शिवा ने भी थी जानी।

अलबेला : चाहे शिवा हरदम पिता की तलवार उठाना। कहे माता बिना प्रशिक्षण यूँ जोर ना लगाना।

निठल्ला : ओ प्यारे अलबेला जी... बात तनिक बतलाना जी।

अलबेला : पूछो क्या चाहते हो जानना जी।

निठल्ला : क्या शिवा भी खेल खेलते थे?

जलेबी : हाँ! वो देखो... वो तो रेत पर घर बना रहे हैं।

रसगुल्लाः ओ बुद्धू! ऐनक लगाकर देख...घर नहीं..वो महल बना रहे हैं।

अलबेला : घोड़े पर बैठे शिवा धरे हाथ तलवार। .... तो मेहरबान... माता बोली, याद रखो जीवन का तुम सार। युद्धभूमि होता वीर सिपाही का घर द्वार। मातृभूमि की रक्षा करना बारंबार।

चमेली : इतनी बड़ी जिम्मेदारी।

अलबेला : दर्शको! श्री राम सा बनना आज्ञाकारी। सीख सिखाती जीजा महतारी।

निठल्ला : वो देखो... किस्से सुनते–सुनते शिवा तो सो गए।

जलेबी : सुन लो..'जो सोये सो खोये।'

बतरस : ना–ना ऐसा गजब ना करना... क्योंकि खेला में अभी बहुत से किस्से बाक़ी हैं। इसी बात पर लेते हैं अल्पविराम। बच्चो! जल्दी आना..यह कथा नहीं है आम। बोलो हिलमिल सीता राम।

(सभी बच्चे जाते हैं)

दृश्य-दो

(सारे बच्चे आ जाते हैं।)

बतरस : आप देख रहे थे शिवाजी का खेला। आगे का हाल बतायेंगे अलबेला।

अलबेला : सुनो... पुत्र शिवा, अर्जुन धनुर्विद्या के किस्से। कृष्ण के मित्र का वर्णन है महाभारत के हर हिस्से।

चमेली : अरे वाह! किस्से मुझे भी अच्छे लगते हैं।

निठल्ला : पहले शिवा का खेला तो देख लो।

चमेली : ठीक है।

अलबेला : हुआ यूँ... अब धर्म, संस्कृति और राजनीति जैसे हर कला में शिवा हुए पारंगत। गुरु दादा कोणदेव के आगे थे नतमस्तक।

निठल्ला : पढ़ाई में भी ?(आश्चर्य से)

बतरस : जी हाँ!

अलबेला : लीजिए पेश है... जब शिवाजी संत रामदेव से मिले... रहकर उनके साथ राष्ट्रप्रेमी और कर्मठ योद्धा से खिले।

रसगुल्लाः इसके बाद क्या हुआ?

बतरस : देखो... अलबेला दिखा रहे हैं।

अलबेला : तो दर्शको, शिवा कुलदेवी माँ तुलजा भवानी की करते थे मन से उपासना। माँ तुलजा के आशीर्वाद से मराठा साम्राज्य का था मस्तक सदा तना।

बतरस : जय हो–जय हो..सदा विजय हो।

अलबेला : जब मुग़ल दुश्मनों से युद्ध करते उन्होंने किये दाँत खट्टे।

अलबेला : दर्शको, शिवाजी अपनी आयु के बालकों को इकट्ठा कर... नेता बनते थे बचपन में। युद्ध और किले जीतने का खेलते खेल, गली मुहल्ले और वन में।

निठल्ला : सही कहा।

अलबेला : तो भैया, बड़े होकर शिवाजी वास्तव में शत्रुओं पर आक्रमण कर उनके किले जीतने लगे।

चमेली : क्या सच में?

अलबेला : हाँ, शिवाजी के हृदय में चतुराई, पराक्रम और विजय के भाव जगे।

जलेबी : ये तो कमाल हो गया।

अलबेला : तो सज्जनो! शिवाजी के प्रताप से आतंकित था बीजापुर शासक आदिलशाह। जब शिवाजी को बंदी न बना सका तो उनके पिता को गिरफ्तार कर पूरी की चाह।

रसगुल्ला: फिर क्या हुआ?

अलबेला : हुआ यूँ... पता चलने पर शिवाजी हुए आग बबूला। नीति और साहस से रक्त बहाए बिना छुड़ाया पिता को, उड़ा दिया धूला।

चमेली : अरे वाह!

अलबेला : 'शिव सूत्र' का किया देश हित आविष्कार। छापामार युद्ध नीति से दुश्मन के दमन का आया विचार।

जलेबी : शिवा ने और क्या किया?

अलबेला : दर्शको, प्रतापगढ़ के पास अफजल खान से हुई मुलाकात। अफजल खान ने दिया आघात। गले मिलते समय चाकू शिवा की पीठ में घोंपते हुए दिखाई औकात। शिवाजी समझते थे यह बात। सतर्कता बरतते अफजल खान को दे डाली फिर से मात।

निठल्ला : बहुत ही अच्छा!

अलबेला : भारतीय गणराज्य के महानायक थे वीर सपूत शिवाजी महाराज।

रसगुल्ला: सो तो है।

अलबेला : देखिए... कौशल के दम पर अंकित है उनका युगों–युगों तक नाम। महान योद्धा और रणनीतिकार छत्रपति शिवाजी का प्रेरक मुकाम।

चमेली : कमाल है!

निठल्ला : छोटे से शिवा! छत्रपति शिवाजी महाराज बने!!

जलेबी : उनके लिए यह सब इतना आसान तो नहीं था।

बतरस : बच्चो! आप सभी अनुशासन और लगन के बल पर इच्छित लक्ष्य हासिल कर सकते हो।

निठल्ला : परन्तु यह भी तो बताओ कैसे?

बतरस : वैसे ही जैसे बालक शिवा से शिवाजी महाराज बने।

निठल्ला : अब समझा।

बतरस : फिर तो अपने मित्रों को भी समझाना।

अलबेला : तो दर्शको! इसी के साथ शिवाजी का चित्रों वाला खेल हुआ समाप्त। *(सभी ताली बजाते हैं और जयघोष करते हैं। अमर रहे... अमर रहे... महानायक... वीर शिवाजी... अमर रहे!)*

(पर्दा गिरता है।)

डॉ. प्रीति प्रवीण खरे
भोपाल (मध्य प्रदेश)

चिड़िया रानी

चिड़िया रानी आना जी।
गीत सुरीले गाना जी।

जाने कहाँ हुई हो गुम।
आती नहीं नजर अब तुम।
सूना आँगन सूना घर,
चाहें तुम्हें बुलाना जी।
चिड़िया रानी आना जी।

देते तुमको यह न्यौता।
कर लो अब तो समझौता।
दाना पानी रख देंगे,
बड़े मजे से खाना जी।
चिड़िया रानी आना जी।

घूम खेत में आना तुम।
तिनके चुनकर लाना तुम।
बैठ पेड़ की डाली पर,
साँझ ढले सुस्ताना जी।
चिड़िया रानी आना जी।

नाना पेड़ लगाएँगे।
बगिया नई बनाएँगे।
बना बसेरा रहना तुम,
दूर कभी मत जाना जी।
चिड़िया रानी आना जी।

उदय मेघवाल 'उदय'
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

बच्चों क्या तुम ?

बच्चो! क्या तुम किसी बाग में भी जाते हो कभी-कभी ?
फूल-पत्तियों से अपना दिल बहलाते हो कभी-कभी ?

हरे-भरे पेड़ों की छाया में कुछ वक्त बिताते हो ?
शुद्ध वायु में गहरी साँसें लेने का सुख पाते हो ?
रंग-बिरंगी तितली से क्या बतियाते हो कभी-कभी ?
बच्चो! क्या तुम किसी बाग में भी जाते हो कभी-कभी ?

चहक रही चिड़ियों की धुन पर कभी ध्यान देते हो क्या
कोयल की मीठी बोली से कोई सबक लेते हो क्या ?
क्या खुद भी उल्लास भरे स्वर में गाते हो कभी-कभी ?
बच्चो! क्या तुम किसी बाग में भी जाते हो कभी-कभी ?

जल-क्रीड़ा करते फव्वारे तुम्हें भले लगते हैं क्या ?
हरियाली के बीच हृदय में भाव नए जगते हैं क्या ?
इस आँगन में आकर थोड़ा मुस्काते हो कभी-कभी ?
बच्चो! क्या तुम किसी बाग में भी जाते हो कभी-कभी ?

बृजराज किशोर 'राहगीर'
मेरठ (उत्तर प्रदेश)

जहाँ चाह, वहाँ राह

देखते ही देखते यह क्या हो गया? सोच–सोचकर वह हैरान था। कक्षा नौ का छात्र कृष्ण अपने बुद्धि चातुर्य से कक्षा के सभी अध्यापकों को मोह लेता था। इतना ही नहीं, अपनी व्यवहार कुशलता से अपने सहपाठियों के भी दिल में समाया रहता था।

''कृष्ण! इस बार अखिल भारतीय खेल–कूद प्रतियोगिता में बहुत कड़ा मुकाबला रहेगा, क्या तैयारी पूरी है?'' –कक्षा अध्यापक ने कृष्ण की ओर देखा।

''जी सर, आपनिश्चिंत रहें। आपका और हमारे विद्यालय का नाम सदैव की तरह इस बार भी प्रथम ही रहेगा।'' –पूरे आत्मविश्वास के साथ कृष्ण ने कहा।

अध्यापक के बताने पर उसने अपनी टीम को खेल का अभ्यास कराना प्रारम्भ कर दिया। प्रतिदिन विद्यालय के समय के बाद वह स्वयं अपने साथियों के साथ अभ्यास करता और परिणामस्वरूप इस बार भी अखिल भारतीय खेल–कूद प्रतियोगिता में उसके विद्यालय की जीत हुई थी। प्रतियोगिता की समाप्ति पर विद्यालय में एक आयोजन किया गया जिसमें खिलाड़ियों की लगन व मेहनत की प्रशंसा करते हुए प्रधानाचार्य जी ने उनको सम्मान–पत्र प्रदान किए।

उसी रात को कृष्ण बिस्तर पर रजाई में घुसने लगा तो उसे अपने शरीर के नीचे के हिस्से में कुछ अजीब–सा महसूस हुआ। उसने अपने दोनों हाथों की हथेलियों को अपने कूल्हों पर रखकर फिराया तो उसे लगा कि वह हिस्सा जैसे सुन्न होता जा रहा है। उसने चिकोटी काटी। अरे! यहाँ तो कुछ महसूस ही नहीं हो रहा है। वह घबरा गया। उसने अपनी माँ को आवाज दी। ''क्या बात है कृष्ण?'' –घबराते हुए माँ ने दूसरे कमरे से उसके पास आते हुए पूछा। ''पता नहीं माँ, मैं वॉशरूम गया था, लौटकर आया तो मेरे यहाँ पर न जाने क्या हो गया? चिकोटी काटने पर भी कुछ महसूस नहीं हो रहा है।''

कृष्ण के मुँह से यह बात सुनकर उसकी माँ बहुत घबरा गई– ''दिखा तो, क्या हुआ है?'' कहते हुए उन्होंने कृष्ण के कूल्हों और कूल्हों से नीचे अपना हाथ फिराया। फिर चिकोटी काटी लेकिन जब कृष्ण ने चिकोटी काटने पर भी कोई भाव प्रकट नहीं किया तो वह रुआँसी हो गई। उन्होंने कृष्ण को बिस्तर से नीचे उतरकर फर्श पर चलने के लिए कहा तो वह खड़ा ही नहीं हो पाया। अब तो वह बहुत घबरा गई और कृष्ण के पिता को आवाज दी।

कृष्ण की इस अचानक हुई हालत को देखकर पिताजी भी घबरा गये। वह तुरन्त ही अपने परिचित डॉक्टर के पास उसे लेकर गये। डॉक्टर ने कृष्ण का पूरा चैकअप किया और तुरन्त ही कुछ इंजेक्शन लगाये। उन्होंने एक कागज पर कुछ दवाएँ भी लिखकर दी जिन्हें कैसे और कब देना है, यह सब कुछ कृष्ण के पिताजी को समझा दिया। डॉक्टर की दवा लेते हुए कई दिन बीत गये किन्तु कृष्ण के प्रभावित हिस्से पर कोई असर नहीं दिखा तो सब चिन्तित हो उठे। अनेक प्रसिद्ध डॉक्टर्स से कृष्ण का चैकअप और इलाज कराया गया किन्तु कृष्ण का धड़ से नीचे का हिस्सा ठीक नहीं हुआ।

अब वह चलना तो दूर अपने आप खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। इन परिस्थितियों में उसे व्हीलचेयर का सहारा लेना पड़ा। एक होनहार मेधावी छात्र के इस तरह अचानक ही अपाहिज हो जाने से उसके विद्यालय के अध्यापक और सहपाठी भी आश्चर्यचकित और दुःखी थे। वे कृष्ण को उसके घर पर देखने के लिए जाते और वापस लौटने पर स्वयं बहुत देर तक चिन्तामग्न होकर कुछ उपाय सोचने लगते।

उसका धड़ से नीचे का हिस्सा पक्षाघात का शिकार हो गया है और अब इसके ठीक होने की कोई आशा भी नहीं है, सोच–सोचकर कृष्ण निराश हो उठता। निराशा जब बहुत अधिक बढ़ जाती तो वह रोने लगता और सोचता कि इस अपाहिज जीवन में अब क्या करे? न वह अब अन्य साथियों की तरह पढ़ने के लिए विद्यालय जा सकता है और न पहले की तरह खेल–कूद में भाग ले सकता है।

इन सब बातों का बवंडर जब उसके मन में उठता तो वह इस जीवन को ही समाप्त करने की सोचने लगता। एक बार उसने आत्महत्या करने का प्रयास भी किया किन्तु तभी उसे अपनी किसी पुस्तक में पढ़ी एक बात– ''आत्महत्या करना कायरों का काम है। जीवन की जंग वही लोग जीतते हैं जो विषम परिस्थितियों में भी हिम्मत और बुद्धिमानी से काम लेते हैं'' याद आ गई। यह बात याद आते ही उसने अपने मन को मजबूत किया और दृढ़ता के साथ आत्महत्या का विचार त्याग दिया।

एक दिन कृष्ण को देखने आये उसके कक्षा अध्यापक अपने साथ कुछ पुस्तकें लेकर आये। कृष्ण ने उन पुस्तकों को उलट–पलट कर देखा किन्तु वे उसके कोर्स की पुस्तकें तो नहीं थीं। उसने अपने अध्यापक की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा तो अध्यापक जी बोले– ''इन पुस्तकों में बहुत–सी उन महान हस्तियों की, महान वैज्ञानिकों की और बहुत से सफल लोगों की जीवनियाँ हैं जिन्होंने अपने जीवन में कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए सफलता प्राप्त की थी।''

कृष्ण ने उन पुस्तकों का बहुत ही गहनता से अध्ययन किया। इन पुस्तकों के अध्ययन ने उसकी सोच की दिशा ही बदल दी। इतना ही नहीं उसकी विवशता और असमर्थता ने उसको लेखन की ओर अग्रसर कर दिया। वह अपनी नोटबुक में कभी कोई छोटी–मोटी कविता तो कभी कोई लेख या संस्मरण या फिर कहानी जैसा कुछ लिख लेता और समय मिलने पर उसे बार–बार पढ़ता।

एक बार उसने एक अखबार में लिखे पते पर अपनी लिखी एक कहानी लिफाफे में बन्द करके एक साथी से डाक में डलवा दी। उसकी खुशी का तब कोई ठिकाना नहीं रहा जब उसकी भेजी हुई कहानी अखबार के रविवारीय अंक में प्रकाशित हो गई। अब तो वह और भी अखबारों को अपनी कहानियाँ और लेख भेजने लगा।

रचनाओं को लिखते–लिखते उसने अब सबसे पहले अपनी शिक्षा के स्तर को खूब बढ़ाने के बारे में विचार किया। उसने स्वयंपाठी परीक्षार्थी के रूप में परीक्षाएँ देने की योजना बनाई। उसने अपनी लगन और बुद्धि चातुर्य को प्रमाणित करते हुए एम.ए. तक की परीक्षाएँ कभी प्रथम श्रेणी में तो कभी जनपद टॉप करते हुए उत्तीर्ण कर लीं।

एम.ए. के बाद पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त करते ही डॉ. कृष्ण के मन में एक अनोखा ही विचार प्रकट हुआ। उसने सोचा, क्यों न युवक–युवतियों व नवलेखकों को साहित्य के प्रति प्रेरित करने और उन्हें सहज व सही मार्गदर्शन के लिए कुछ किया जाय। इस विचार के आते ही कृष्ण ने अपने घर में ही 'कहानी लेखन महाविद्यालय' की स्थापना करने का मन बनाया। इससे उसे कहीं बाहर भी नहीं जाना पड़ेगा और घर बैठे ही आय का कुछ साधन बन जायेगा।

कहानी लेखन महाविद्यालय का विचार मन में आने पर कृष्ण ने बहुत–सी ऐसी पुस्तकों का अध्ययन किया जिनमें कहानी, लेख और पटकथा आदि लेखन के विषय में जानकारी थी। उन पुस्तकों के अध्ययन से डॉ. कृष्ण ने स्वयं परिश्रम करके पाठ्यक्रम के अनुसार छोटे–छोटे पाठ तैयार किए और फिर उन्हें घर बैठे पत्राचार के माध्यम से सिखाने हेतु फीस निर्धारित करके विभिन्न अखबारों में और पत्रिकाओं में उसका विज्ञापन किया।

लेखन में रुचि रखने वाले नये–नये लेखकों ने उन विज्ञापनों को पढ़ा तो उन्हें एक नई चीज मिली। कहानी लिखना या फिल्मों की पटकथा लिखना या अखबारों और पत्रिकाओं को लेख लिखना सीखने के लिए लालायित लोगों के आवेदन डॉ. कृष्ण के पास आने लगे तो उसको अपनी योजना पर प्रसन्नता भी हुई और गर्व भी।

वह पाठ्य सामग्री के साथ अपने हाथ से लिखा एक पत्र भी जरूर रखते थे जिसमें उस नवलेखक को प्रोत्साहित करने वाली बातें वह लिखा करते थे। डॉ. कृष्ण की प्रसन्नता का तब कोई ठिकाना नहीं रहा जब एक–दो महीना बीतते–बीतते ही उनके पास कहानी, लेख और पटकथा लेखन सीखने वालों की एक अच्छी–खासी संख्या हो गई। इतना ही नहीं डॉ. कृष्ण के बनाये गये पाठों से सीख–सीखकर अपने लेखन के मार्ग को सहज और आसान बनाने वालों के प्रशंसा भरे पत्र भी डॉ. कृष्ण को अब बहुत मात्रा में मिलने लगे थे। इस प्रकार एक 'चाह' ने जीवन की 'राह' खोज ली।

डॉ. दिनेश पाठक 'शशि'
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

वह क्या है जो रेल में आगे रहता है, मोटर में पीछे और साइकिल में नहीं होता है ?

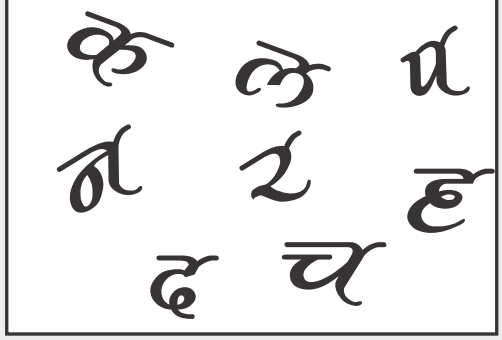

दादी-दादा, प्यारे-प्यारे

दादा-दादी, प्यारे-प्यारे,
कभी नहीं जीवन में हारे।
सदा साथ बच्चों का देते,
बच्चे उनके बड़े दुलारे।
दादा-दादी, प्यारे-प्यारे...

किस्से उनको कभी सुनाते,
कभी बैठकर उन्हें पढ़ाते।
पापा जब गुस्से में होते,
बच्चों को तब वही बचाते।
जीवन कैसे जीना होगा,
भेद बताते उनको सारे।
दादा-दादी, प्यारे-प्यारे...

माँ-पापा जब दफ्तर जाते,
दादा राशन लेकर आते।
दादी के हाथों का खाना,
एक साथ सब मिलकर खाते।
छोटे हों या बड़े काम हों,
निपटा देते पल में सारे।
दादा-दादी, प्यारे-प्यारे...

जिस घर में ये बड़े न होते,
बच्चे अपना बचपन खोते।
ध्यान न देता कोई उन पर,
बिना सुने लोरी वह सोते।
किसको फुर्सत मीठा बोले,
दिल से उनको कौन पुकारे।
दादा-दादी, प्यारे-प्यारे...

किशोर श्रीवास्तव
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

अगर न होते पेड़ धरा पर

अगर न होते पेड़ धरा पर,
सोचो आम खिलाता कौन ?
चीकू, केला, बड़ा रसीला
लाल अनार दिलाता कौन ?

सेब, सन्तरा और मौसम्बी
इनका जूस पिलाता कौन ?
देकर जामुन और फालसे,
गर्मी दूर भगाता कौन ?

काजू किशमिश और बादाम,
मेवे हमें खिलाता कौन ?
तरह-तरह के खनिज-विटामिन,
देकर स्वस्थ बनाता कौन ?

अगर न मिलती इनसे रुई,
वस्त्र हमारे बनाता कौन ?
गरमी-सर्दी-वर्षा से फिर,
बोलो हमें बचाता कौन ?

दूषित वायु शुद्ध बनाकर
सबके प्राण बचाता कौन ?
अगर न होते पेड़ धरा पर
तो जीवित रह पाता कौन ?

पेड़ हमारा पोषण करते
रोको, नहीं गिराएँ लोग।
आओ करें प्रतिज्ञा मिलकर
नित नए पेड़ लगाएँ लोग।

डॉ. शकुंतला कालरा
दिल्ली

बनाएँ रेल

रमेशचंद्र पंत
अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

पढ़ना-लिखना बहुत हो गया
हुई शाम अब खेलें खेल,
छुक-छुक-छुक-छुक चलती जाए
मिलकर एक बनाएँ रेल।

खो-खो और कबड्डी से भी
होती चुस्त हमारी देह,
और खेल हैं कितने जिनसे
आपस में बढ़ता है नेह।

अगर नहीं हम रहे स्वस्थ तो
फिर पढ़ना होगा बेकार,
रहे स्वस्थ तन-मन दोनों ही
यही सफलता का है सार।

बाँटें हम सुख-दुःख भी सबका
अच्छी रहे हमारी सोच,
जीवन हो कुछ ऐसा इसमें
कहिए तो कैसा संकोच।

छुट्टी का दिन

छुट्टी का दिन है अच्छा है,
कुछ तो करलें आज पढ़ाई।
इसी सोच को लेकर बच्चे,
नीचे बैठे बिना चटाई।

टूटा सा जर्जर छप्पर है,
जिसमें मिलती थोड़ी छाया,
मौसम है प्रतिकूल भले ही,
इनका पढ़ने को मन आया।

देखो कितने ध्यान मगन हैं,
इन्हें गृह कार्य निपटाना है।
लगता शायद भूल गए हैं,
कुछ आम तोड़ कर खाना है।

कल ही शाला जाकर सबको,
अपनी कॉपी चेक करानी।
पूरे-पूरे अंक प्राप्त कर,
फिर दादी से टॉफी खानी।

अच्छी आदत राह खोलती,
अपना होता सपना पूरा।
जो भी काम मिला है हमको,
उसको छोड़ें नहीं अधूरा।

योगीराज योगी
कोटा (राजस्थान)

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

ब्राजील में 99 साल पुरानी दौड़

साओ सिलवेस्ट्रे इंटरनेशनल रेस प्रतिवर्ष होने वाली एक मैराथन दौड़ है। इस साल इसमें 30 हजार से ज्यादा प्रतिभागी शामिल हुए। 99 साल पुरानी इस दौड़ को दुनिया की सबसे बड़ी 15 किमी की सड़क रेस माना जाता है। यह दौड़ पहली बार 1925 में शुरू हुई, तब से यह हर साल आयोजित की जाती है।

सबसे लम्बी ड्राइवरलेस ट्रेन

सऊदी अरब में दुनिया का सबसे लम्बा ड्राइवरलेस ट्रेन सिस्टम पूरी तरह संचालित होने लगा है। रियाद मेट्रो नेटवर्क की ऑरेंज लाइन शुरू होने से यह सम्भव हुआ। यह 41 किमी लम्बी लाइन पूर्वी और पश्चिमी रियाद को जोड़ती है। कुल छह लाइनों वाले 176 किमी लम्बे नेटवर्क में 85 स्टेशन हैं। पूरे नेटवर्क पर ड्राइवरलेस मेट्रो दौड़ती है।

सेकंड लैडी ऑफ द यूनाइटेड स्टेट्स

भारतीय मूल की अमेरिकी महिला उषा चिलुकुरी वेंस को 'सेकंड लैडी ऑफ द यूनाइटेड स्टेट्स' की महत्वपूर्ण पदवी प्राप्त हुई है। ऐसा उनके पति जेडी वेंस के अमेरिका के उप-राष्ट्रपति बनने से हुआ है जिन्होंने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के साथ 20 जनवरी को राजधानी वाशिंगटन डीसी के कैपिटल हिल में पद की शपथ ली। विशाखापत्तनम में रहने वाली उनकी परदादी चिलुकुरी संथम्मा (96 वर्ष) को भारत की सबसे बुजुर्ग सक्रिय प्रोफेसर माना जाता है।

23 हजार पेड़ों वाली ईको फ्रेंडली बिल्डिंग

ताइपे में स्थित ताओ झू यिन युआन एक ऐसी इमारत है जो न केवल अपनी अनोखी डिजाइन बल्कि ग्रीन बिल्डिंग के लिए भी प्रसिद्ध है। 2021 में तैयार हुई इस 40 मंजिली बिल्डिंग को प्रसिद्ध आर्किटेक्ट विंसेंट कैलेबॅट ने डिजाइन किया है। इसमें 23 हजार पेड़ लगे हैं जो प्रति वर्ष 130 टन कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं। यह इमारत न केवल एक सुन्दर और अनोखी डिजाइन का उदाहरण है बल्कि यह पर्यावरण के अनुकूल भी है।

रेयांश ने समुद्र में 15 किमी तैरकर बनाया रेकॉर्ड

ठाणे के छह वर्षीय तैराक रेयांश खामकर ने सभी को चौंकाते हुए समुद्र में 15 किमी की दूरी पूरी की। वह सबसे कम उम्र में 15 किमी की दूरी पूरी करने वाले तैराक बन गए हैं। रेयांश ने विजयदुर्ग में मालपे जेट्टी से वाघोटन जेट्टी तक की दूरी तीन घंटे में पूरी की। उनकी इस उपलब्धि को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में जगह मिली है। उन्होंने अपने पहले ही प्रयास में यह उपलब्धि हासिल की।

दुनिया की सबसे युवा पर्वतारोही बनी काम्या

मुम्बई की 17 साल की काम्या कार्तिकेयन ने सभी 7 महाद्वीपों की 7 चोटियों को फतह कर रिकॉर्ड बनाया है। काम्या ऐसा करने वाली दुनिया की सबसे युवा पर्वतारोही बन गई है। उन्होंने 24 दिसम्बर को अंटार्कटिका के माउंट विन्सन को फतह करके यह मुकाम हासिल किया। काम्या के अनुसार हर चोटी हिम्मत और सहनशक्ति की सीख देती है।

आखिर, युद्ध से क्या मिलता है?

बच्चो, पत्रिका का यह अंक छपने के लिए प्रेस में जाने को तैयार हो रहा है, तभी एक समाचार पूरी दुनिया में फैल रहा है– "इजराइल और फ़लस्तीन के बीच हुआ युद्धविराम पर समझौता"।

- क्या आप जानते हैं कि यह युद्ध पिछले लगभग पन्द्रह महीने से चल रहा है।
- इस युद्ध के दौरान हुए हवाई और जमीनी हमलों में शहर के शहर तबाह हो गए और इमारतें मलबे के ढेर में बदल गईं।
- इस दौरान लगभग 50 हजार लोगों की जान जा चुकी है और 1 लाख से अधिक घायल जिन्दगी और मौत के बीच झूल रहे हैं।
- ये मरने वाले या घायल हुए लोग सीमा पर लड़ने वाले सैनिक नहीं हैं बल्कि आम नागरिक हैं, इनमें बड़ी संख्या में बच्चे और महिलाएँ भी शामिल हैं।
- वैसे तो इजराइल और फलस्तीन का बहुत पुराना विवाद है लेकिन 7 अक्टूबर 2023 को फलीस्तीन के हमास लड़ाकों ने इजराइल के सभागार पर हमला किया था जहाँ संगीत का एक कार्यक्रम चल रहा था, इस हमले में 1200 लोग मारे गए और करीब 250 लोगों को बंधक बना लिया गया।
- इसके जवाब में शुरू हुआ इजराइल का बदला जो 15 महीने तक चला, अब बन्द होने की सम्भावना जगी है।

- संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार गाजा पट्टी (फलीस्तीन का युद्ध ग्रस्त क्षेत्र) के लगभग 70% मकान हमलों में गिर गए या उन्हें नुकसान पहुँचा है।
- 50% अस्पताल हमलों में नष्ट हो गए या बन्द कर दिए गए।
- गाजा पट्टी में रहने वाले 90% लोगों को, यानी 19 लाख लोगों को अपना घर छोड़ कर भागना पड़ा।

आखिर युद्ध से क्या मिलता है?

- कितने घर उजड़ जाते हैं!
- कितने बच्चे अनाथ हो जाते हैं!
- हथियारों में करोड़ों–अरबों रुपये स्वाहा हो जाते हैं!
- फिर भी समाधान नहीं मिलता! समाधान तो आखिर बातचीत से ही निकलता है।
- छोटे–छोटे झगड़े भी कभी–कभी बड़ा रूप ले लेते हैं। इसलिए, झगड़ों से बचना चाहिए और बातचीत का रास्ता कभी बन्द नहीं करना चाहिए।

संचय जैन

मणिपुर एवं मिजोरम का राज्य पक्षी
श्रीमती ह्यूम फीजेन्ट

श्रीमती ह्यूम एक एशियाई पक्षी है। इसे ह्यूम का पट्टेदार पूँछ वाला, नांगयिन, वावु आदि नामों से भी जाना जाता है। इसकी खोज 1881 में कांग्रेस के संस्थापक और पक्षी विशेषज्ञ ए. ओ. ह्यूम ने की थी। यह भारत के उत्तर–पूर्व के राज्यों– मणिपुर, मिजोरम और नागालैंड में पाया जाता है। मध्यम आकार के इस पक्षी का सिर शरीर की तुलना में छोटा दिखाई देता है। इसकी नाक और नथुने ढँके हुए रहते हैं तथा आँखों के चारों ओर पंखविहीन त्वचा होती है। इसके मजबूत पैरों की बनावट इस प्रकार की होती है जिससे यह जमीन पर तेजी से दौड़ सकता है। नर चटकदार चमकीले रंगों वाला होता है। इसका सिर हरापन लिए धूसर रंग का होता है। मस्तक और गुद्दी जैतूनी कत्थई रंग की होती है। इसका गला और सीने का ऊपरी भाग धातुई स्टील जैसा नीला होता है।

डॉ. कैलाश चन्द सैनी
जयपुर (राजस्थान)

हिन्दी नाम
श्रीमती ह्यूम फीजेन्ट (नांगियन/वावु)
अँग्रेजी नाम
Mrs- Hume's Pheasant
वैज्ञानिक नाम
Syrmaticus humiae
फोटो
डॉ. अनवरुद्दीन चौधरी

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

दुर्घटना

चित्रकथा-

संकेत गोस्वामी, जयपुर

जो जीते हैं जमाने के लिए

आकर्षण सतीश

जरूरतमन्दों के लिए खोले 15 पुस्तकालय

करुणा मानवता का सबसे बड़ा गुण है। इस गुण को भली–भाँति आत्मसात किया है हैदराबाद की किशोरी आकर्षण सतीश ने। दयालु स्वभाव की आकर्षण ने अपनी उम्र से ज्यादा तो पुस्तकालय खोल दिए हैं। मात्र 13 वर्ष की इस टीनेजर ने अब तक 15 पुस्तकालय खोलकर देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का तो दिल जीता ही है, उसके इस शुभ कार्य की प्रशंसा प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी भी कर चुके हैं। प्रधानमन्त्री मोदी ने उससे वादा किया है कि उसके द्वारा खोले गए 25वें पुस्तकालय का उद्घाटन वे स्वयं करेंगे।

वर्ष 2021 में हैदराबाद पब्लिक स्कूल की 9 वर्षीय छात्रा आकर्षण जब अपने माता–पिता के साथ भोजन परोसने एमएनजे कैंसर हॉस्पिटल गई तो वहाँ उसने कुछ बच्चों को कविता की पुस्तक और रंग भरने की ड्राइंग बुक्स माँगते हुए देखा लेकिन कोई उन्हें यह पुस्तक नहीं दे पा रहा था।

उनकी बेबसी पर उसका कोमल मन पसीज उठा। उसने उसी समय निर्णय लिया कि वह लोगों से किताबें इकट्ठी करके उन्हें यहाँ वितरित करेगी। आकर्षण ने अपने विचार को साकार रूप देते हुए उन बच्चों के लिए 1036 पुस्तकें देखते ही देखते इकट्ठी कर लीं। इस सफलता से उसका मन ऊर्जा से भर उठा। उसने अगले तीन वर्षों में न सिर्फ 10,000 किताबें इकट्ठी की बल्कि अलग–अलग स्थानों पर 15 पुस्तकालय भी खोल दिए।

ये पुस्तकालय तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के अस्पतालों, अनाथालयों और पुलिस स्टेशनों में खोले गए हैं। आकर्षण ने अपने पुस्तकालय रिश्तेदारों, पड़ोसियों, सहपाठियों, मित्रों आदि से पुरानी पुस्तकें दान में लेकर शुरू किये।

आज उसके पास हिन्दी, अँग्रेजी और तेलुगू भाषा की किताबों की भरमार है। इनमें कहानी की किताबों से लेकर जनरल नॉलेज तक हर तरह की पुस्तकें हैं। आकर्षण का नाम अपने इस कार्य के लिए इंडिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज हो चुका है।

अब आकर्षण एवं उसके पिता शीघ्र ही नेशनल बुक ट्रस्ट और हैदराबाद मेट्रो के साथ मिलकर मेट्रो स्टेशनों पर भी लाइब्रेरी खोलने की योजना बना रहे हैं ताकि यात्री अपनी रुचि के अनुसार पुस्तक ले जाकर पढ़ सकें और फिर वापस लौटा सकें ।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

अकेला चना

''मम्मी... मम्मी...'' एक पत्रिका में कोई कहानी पढ़ते हुए अर्णव जोर से चिल्लाया। मम्मी रसोई में थी। ''आ रही हूँ'' –कहती हुई अर्णव के पास पहुँच गयी। 'हाँ, बोलो क्या है?" ''मम्मी, अकेला चना भाड़ क्यों नहीं फोड़ सकता? मम्मी ये भाड़ क्या होता है? और चना उसे क्यों फोड़ना चाहता है?" अर्णव की बात सुनकर पहले तो मम्मी मुस्कराई, फिर बोली– ''अभी बताती हूँ।"

कुछ सोचने के बाद मम्मी ने अर्णव से ही पूछ लिया– ''अच्छा पहले ये बताओ। ये तुमको किसने बताया कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता?" ''ये इस कहानी में लिखा है।" ''क्या लिखा है?" ''यही कि दो साथियों में किसी काम के लिए आपस में झगड़ा हो गया तो एक ने कहा– ठीक है, तुम लोगों को मेरे साथ आने की जरूरत नहीं है, मैं अकेले ही काफी हूँ, कर लूँगा मैं। तो जानती हो मम्मी दूसरे साथी ने कहा– जाओ–जाओ, पिद्दी भर के हो। बड़े साहसी बनते हो। देखता हूँ कैसे करते हो, तुमको शायद पता नहीं है– अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।"

''तो फिर क्या हुआ?'' मम्मी ने बीच में टोका। अर्णव ने कहानी पढ़ते हुए कहा– ''उसने कहा– भाई मैं बोल रहा हूँ, वो काम अकेले तेरे वश का नहीं है। सबको मिलकर करना पड़ेगा।" ''हाँ, तो क्या समझे?" अब मम्मी ने फिर प्रश्न किया और चुपचाप अर्णव को देखने लगी। ''मैं तो अभी भी कुछ नहीं समझा...ये भाड़ क्या है? और चना उसे क्यों फोड़ना चाहता है?"

''बेटा, ये सब कहावतें हैं। इन्हें ही लोकोक्तियाँ भी कहते हैं। हम जो भी बातें करते हैं, उस भाषा को सशक्त बनाने के लिए कहावतों एवं मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। दोनों की परिभाषा में थोड़ा–सा अन्तर है किन्तु बातचीत के बीच में इनके प्रयोग से भाषा और अच्छी हो जाती है। इससे क्रोध, हास्य, घृणा, प्रेम, ईर्ष्या आदि भावों को सफलतापूर्वक व्यक्त किया जा सकता है। ये कहावतें अनुभव के आधार पर लिखी गई हैं।''

''तो मम्मी 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता' का मतलब है, कोई बड़ा कार्य अकेले के वश का नहीं होता,

मिलकर करना चाहिए।'' ''हाँ, तभी तो कहा जाता है, एक और एक ग्यारह होते हैं।'' मम्मी ने समझाया। ''ये तो ठीक है मम्मी... लेकिन मम्मी भाड़ का मतलब क्या होता है?'' ''ओह, ये तो मैंने बताया ही नहीं, देखो भाड़ उसे कहते हैं, जहाँ लाई–चना आदि भूना जाता है और जो भूनता है उसे 'भड़भूजा' कहते हैं।''

''भाड़ एक बड़ा–सा चूल्हा होता है, हलवाई की भट्टी की तरह। यह जमीन में गड्ढा खोदकर बनाया जाता है, जिसमें एक तरफ से लकड़ी, सूखी पत्ती आदि जलने के लिए डालते हैं। उसके ऊपर बड़ी–सी कढ़ाही में थोड़ी–सी बालू डाल कर रखते हैं। बालू गर्म होने पर उसमें चना, मटर, धान, गेहूँ कुछ भी डालकर चलाते हैं तो वह भुन जाता है और खाने में स्वादिष्ट भी लगता है।''

''मतलब 'भाड़' बड़ा–सा होता है। तब तो सही बात है मम्मी, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। अच्छा मम्मी, अगर सौ चने मिलकर भाड़ फोड़ना चाहे तो?'' अर्णव अभी भी चना और भाड़ में अटका था।

''पता नहीं... तुम बहुत सवाल करते हो? पापा के साथ जाकर, भाड़ देख आओ।'' मम्मी ने झुँझलाहट में कहा और कुछ देर चुप रही। फिर मन ही मन सोचने लगी। अब जल्दी से भाड़ कहीं दिखता भी तो नहीं। गाँव कोई जाना ही नहीं चाहता। ये बच्चे क्या जानेंगे, भाड़ क्या है? कल को बच्चे ये भी पूछेंगे कि कुआँ क्या है? आँगन क्या है? ऐसे ही ये कहावतें भी लुप्त हो जाएँगी।

''अच्छा मम्मी, इस तरह और भी कहावतें या कोई मुहावरा है जो चने को लेकर हो।'' अर्णव ने पूछा तो मम्मी अचानक बोली– ''हाँ है ना, कई कहावतें हैं... जैसे 'थोथा चना बाजे घना' मतलब जिसको कम ज्ञान होता है, वह दिखावा करने के लिए अधिक बोलता है। कुछ मुहावरे हैं जैसे लोहे का चना चबाना, नाकों चना चबाना।''

अब अर्णव जोर से हँसा– ''क्या बोली मम्मी, लोहे का चना और क्या बोली थी, नाक से चना चबाना। इम्पोसीबल मम्मी, क्या बात करती हो?'' ''फिर तुम वहीं अटक गये। इन सबके भाव को समझो बेटा, अभी मैंने बताया था कि ये मुहावरे, कहावतें क्यों प्रयोग किये जाते हैं?''

अर्णव ने सहमति जताई– ''जी मम्मी!'' मम्मी ने समझाया– ''तो ध्यान से सुनो! लोहे के चने चबाना, इसका मतलब बहुत कठिन काम करना या संघर्ष करना। नाकों चना चबाने का अर्थ है बहुत परेशान करना जैसे कोई आदमी किसी को बहुत परेशान कर रहा है तो उसके लिए कहा जाता है कि उस आदमी ने तो नाकों चने चबवा दिये।''

''हाँ, ये बात एकदम समझ में आ गयी। मम्मी, यू आर ग्रेट!'' कहता हुआ अर्णव अपनी मम्मी से लिपट गया।

श्याम नारायण श्रीवास्तव
रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

दुनिया भर की गुप्तचरी बाद में करना। पहले यह पता लगाओ कि शहर में सस्ती चीजें कहाँ मिलती हैं ?

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राज.)

परख

आपकी प्रिय बाल पत्रिका 'बच्चों का देश' ने हाल ही में अपने प्रकाशन की रजत जयंती मनाई है। इस ऐतिहासिक अवसर पर अणुविभा मुख्यालय 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' राजसमंद में 16 से 18 अगस्त को आयोजित 'बाल साहित्य समागम' एक यादगार आयोजन बन गया। इस मौके पर प्रकाशित पत्रिका के रजत जयंती विशेषांक को भी व्यापक सराहना प्राप्त हो रही है। स्नेही पाठकों व रचनाकारों के विशेषांक व समागम के संदर्भ में प्राप्त कुछ विचार यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। यह क्रम आगामी अंकों में भी जारी रहेगा।

अणुविभा द्वारा आयोजित 'बच्चों का देश' पत्रिका के इस विशिष्ट आयोजन में शामिल होने का अनुभव मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर की तरह मेरी यादों को सदा अलंकृत करता रहेगा। प्रकृति के सान्निध्य में राजसमंद झील के सामीप्य में बालकों को सुंदर वर्तमान एवं सुखद भविष्य देने को कृतसंकल्प अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी एवं संस्था के पावन उद्देश्य और इसे क्रियान्वित करने को दृढ़संकल्प इसके सभी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों के एकजुट प्रयत्नों की साक्षी बनना एक ऐसा मौका था जो मुझे ही नहीं समस्त बाल साहित्यकारों के साहित्य को नई ऊर्जा से ओतप्रोत कर उनसे और भी उद्देश्यपूर्ण और महत्त्वपूर्ण बाल साहित्य का सृजन करवाने में एक महत्त्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

इसमें इन तीन दिनों तक उपस्थित रहकर मैं स्वयं को अत्यधिक सम्मानित एवं गौरवान्वित अनुभव कर रही हूँ। मैं आपको यह विश्वास दिलाती हूँ कि बच्चों के पूर्ण विकास के उद्देश्य को लेकर इस संस्थान के साथ मैं सदैव जुड़ी रहना पसन्द करूँगी और इसकी कभी भी किसी भी गतिविधि के साथ कार्य करने में मुझे अत्यधिक सन्तोष और गर्व की अनुभूति होगी।

कविता मुकेश
बीकानेर (राजस्थान)

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की अनगिनत यादें अंतर्मन में सहेजे हूँ। निश्चय ही यह एक ऐसा अद्भुत समारोह था जिसकी यादें किसी भी बालसाहित्यकार के अंतर्मन से कभी धूमिल नहीं होंगी। समस्त 'बच्चों का देश' परिवार का सान्निध्य हम सभी के लिए प्रेरणादायी रहा।

देशबंधु शाहजहांपुरी
शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश)

बच्चों का देश पत्रिका द्वारा राजसमंद में आयोजित बालसाहित्य समागम अपने आप में एक अनूठा कार्यक्रम था। आयोजक मंडल द्वारा आमंत्रित तथा आए हुए सभी साहित्यकारों को अपने विचार रखने के लिए अवसर दिया जाना तथा एक निर्धारित सीमा के अन्दर सत्रों का आयोजन किया जाना, समय प्रबंधन का अनूठा उदाहरण था। अतिथि साहित्यकारों का स्थानीय समीपवर्ती स्कूलों में बच्चों के साथ एक साथ साहित्य संवाद अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रहा। बालसाहित्य के प्रचार–प्रसार में सभी साथी नए उत्साह के साथ कार्य करेंगे, ऐसी आशा है। अणुव्रत विश्व भारती परिवार से जुड़े सभी मित्रों व सहयोगियों को बधाई।

उदय किरौला,
अल्मोड़ा (उत्तराखंड)

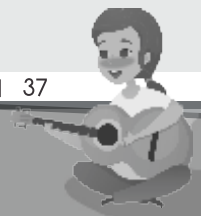

पाखी जैन, कक्षा 7, उदयपुर (राज.)

नेहा जैन, कक्षा-6, बीकानेर (राज.)

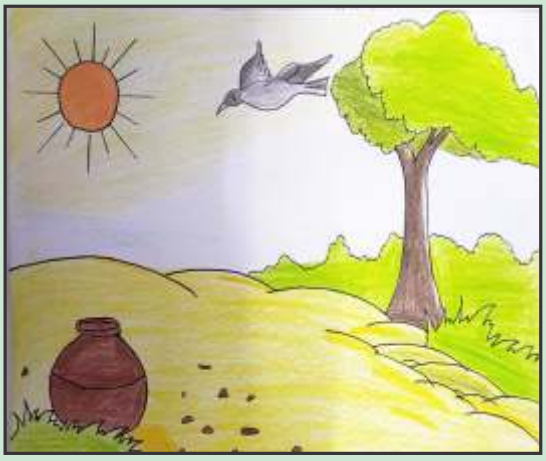

दीपशिखा, कक्षा-5, बीकानेर(राज.)

वह गाँव बहुत याद आता है

वे गाँव की छोटी सड़कें
वे गाँव के नटखट लड़कें
जहाँ रहती पेड़ों की छाँव
याद बहुत आता वह गाँव।
वह दोस्तों के संग खेल,
अपना आपसी वही मेल।
वह माँ के हाथ की रोटी,
और चंचल बहना छोटी।
इन सबका ख्याल सताता है,
वह गाँव बहुत याद आता है।

जहाँ मिलकर साथ में
त्योहार मनाया जाता है,
जहाँ आपसी सुख-दुख में
साथ निभाया जाता है,
वह गाँव बहुत याद आता है।

कामरान,कक्षा-9, जनपद-बहराइच (उत्तर प्रदेश)

दृष्टि माहेश्वरी, कक्षा-प्रेप 2, चित्तौड़गढ (राज.)

इस पेज के लिए अपनी रचना मो. नं. 9351552651 पर भेजें।

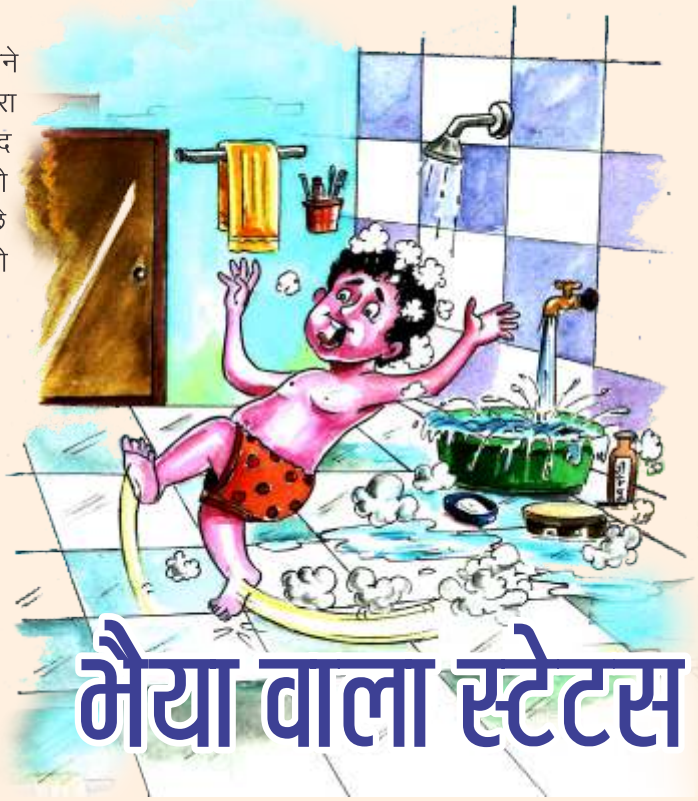

भैया वाला स्टेटस

रोहन घर का छोटा बच्चा होने का खूब फायदा उठाता। वह सारा दिन बन्दर की तरह उछल–कूद धमाचौकड़ी मचाता। मम्मी चकरी की तरह उसके आगे–पीछे घूमतीं। पापा सारी फरमाइशें पूरी करते, बड़ा भाई अंकुश उसके नखरे उठाता। अंकुश सत्रह बरस का और रोहन सात बरस का है इसलिए सारे घर की रौनक और खुशी है रोहन।

इस लाड़–प्यार से तो रोहन बहुत खुश था पर वह अपने भैया से हर वक्त अपनी तुलना करता रहता था। उसे लगता भैया को तो अपनी मर्जी से सारे काम करने की छूट है पर उसे हर काम के लिए मम्मी–पापा और भैया की मदद लेनी पड़ती है। उसे लगता कि घर में भैया की इज्जत ज्यादा है, उनका स्टेटस ऊँचा है। यह बात उसे खटकने लग गई थी।

एक दिन रोहन ने ऐलान कर दिया कि अब वह बड़ा हो गया है, उसे छोटा बच्चा न समझा जाए। अब से वह भैया की तरह अलग कमरे में रहेगा, अपना सारा काम खुद करेगा। उसे भी भैया वाला 'स्टेटस' चाहिए। भैया का तो हँसते–हँसते बुरा हाल हो गया। मम्मी–पापा भी 'स्टेटस' शब्द सुनकर हँस पड़े।

खैर, रोहन को खुशी–खुशी 'स्टेटस' दे दिया गया। जनाब ने ऐलान तो कर दिया पर जब सारे काम खुद करने पड़े तो नानी याद आ गई। अपना खाना खुद खाना पड़ा। रात को अकेले सोये तो लगा भूत–प्रेत कमरे में मंडरा रहे हैं। मन हुआ भागकर मम्मी से लिपट जाये, पर इज्जत का सवाल था न! अपना मजाक तो नहीं बनवाना था! इसलिए टेडीबीयर के साथ चिपक कर सो गये।

असली मुसीबत आई जब अकेले नहाने के लिये बाथरूम में घुसे। कपड़े टाँगने की खूँटी तक हाथ नहीं पहुँचा, इसलिये बेडरूम में बेड पर कपड़े रखने पड़े। सबसे पहले जो बॉटल खोली तो हाथ में ढेर सारा शैम्पू आ गया। हड़बड़ी में उसे बालों पर मल दिया, थोड़ा पानी डाला, हाथ से मला तो इतना ढेर झाग बन गया कि आँखों के साथ मुँह, नाक, सबको ढँक लिया। आँखों में मिर्ची–सी जलन लग रही थी, कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। जैसे–तैसे पानी डाला तो थोड़ा–सा दिखाई दिया, मगर जितना पानी डाला था, उससे पूरा शैम्पू निकला नहीं। रोहन को नहाने का काम मुसीबत लगने लगा। बाथरूम में उसका दम घुटने लगा।

याद आया कि मम्मी नहलाने के बाद शरीर पोंछ कर बॉडी लोशन भी लगाती है। उसने जल्दी–जल्दी बदन पोंछा, एक बॉटल का ढक्कन खोलकर हथेली पर लोशन पलटा, ढेर सारा लिक्विड जमीन पर फैल गया। उसने बिना समय गँवाये सारा लिक्विड शरीर पर मल लिया। यह क्या? यह तो नारियल का तेल था जो शैम्पू और पानी के साथ मिलकर पूरे बदन से चिपक गया था। अब रोहन की हालत खराब होने लगी। उसे रोना आ रहा था। फिर सोचा कि अब जो भी है, मैं जल्दी से बेडरूम में जाकर फटाफट कपड़े पहनकर तैयार हो जाता हूँ। सबसे पहले डाइनिंग टेबल पर नाश्ते के लिए पहुँच जाऊँगा। सब हैरान रह जायेंगे।

जितनी फुर्ती से वह खड़ा हुआ उतनी ही फुर्ती से धड़ाम से गिर गया। नारियल का बहुत सारा तेल फर्श पर गिरा था, जनाब उसी पर रपट गये। मन तो हुआ मम्मी को आवाज दे पर फिर वही इज्जत का सवाल! जैसे–तैसे वह उठा, धीरे–धीरे कमरे में पलंग के पास पहुँचा, फटाफट कपड़े पहने, पलंग पर उछल कर लेटा और रजाई में दुबक गया। बिस्तर का हाल तो पूछो मत! रजाई, तकिया, चादर, सब पर शैम्पू–तेल के धब्बे आ गए। अपने कपड़े देखे तो उनका भी वही हाल। नीचे फर्श, पायदान, सबका हाल बेहाल।

बाथरूम के अन्दर की दुर्दशा तो वह जानता ही था। अब डर लगा और समझ में भी आ गया कि बचपन में मम्मी–पापा और बड़े बहन–भाइयों की मदद लेना जरूरी होता है। ऐसा सोचते ही आँखों से झर–झर आँसू बहने लगे। रजाई से मुँह बाहर निकाला तो सामने मम्मी खड़ी थी। रोहन की तो सिट्टी–पिट्टी गुम हो गई। मम्मी ने एक नजर बाथरूम पर डाली, रजाई, तकिया और रोहन के कपड़ों को घूरा, धीरे से उसका हाथ पकड़ा, सँभालकर रोहन को अपने कमरे के बाथरूम में ले गई।

जब रोहन मम्मी के हाथों से तैयार हो गया तो चुपचाप मम्मी के गले से लग गया। मम्मी ने भी बिना कुछ कहे उसे प्यार से चूम लिया। रोहन धीरे से मम्मी के कान में बोला– ''भैया वाला स्टेटस नहीं चाहिए मम्मी, मैं छोटा ही ठीक हूँ।''

सुमन ओबेरॉय
भोपाल (मध्य प्रदेश)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है,
इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

						2		
	8				7		9	
6		2				5		
	7			6				3
			9		1			
				2			4	
		5				6		3
	9		4				7	
		6						

उत्तर इसी अंक में

नाव की उपयोगिता

व्हाट्सएप कहानी

एक बादशाह अपने कुत्ते के साथ नाव में यात्रा कर रहा था। उस नाव में अन्य यात्रियों के साथ एक दार्शनिक भी था। उस कुत्ते ने कभी नौका में सफर नहीं किया था, इसलिए वह अपने को सहज महसूस नहीं कर पा रहा था। वह उछल–कूद कर रहा था और किसी को चैन से नहीं बैठने दे रहा था।

मल्लाह उसकी उछल–कूद से परेशान था कि ऐसी स्थिति में यात्रियों की हड़बड़ाहट से नाव डूब जाएगी। वह भी डूबेगा और दूसरों को भी ले डूबेगा। परन्तु कुत्ता अपने स्वभाव के कारण उछल–कूद में लगा था। ऐसी स्थिति देखकर बादशाह भी गुस्से में था। पर, कुत्ते को सुधारने का कोई उपाय उन्हें समझ में नहीं आ रहा था।

नाव में बैठे दार्शनिक से रहा नहीं गया। वह बादशाह के पास गया और बोला– "सरकार! अगर आप इजाजत दें तो मैं इस कुत्ते को भीगी बिल्ली बना सकता हूँ।" बादशाह ने तत्काल अनुमति दे दी।

दार्शनिक ने दो यात्रियों का सहारा लिया और उस कुत्ते को नाव से उठाकर नदी में फेंक दिया। कुत्ता तैरता हुआ नाव के खूंटे को पकड़ने लगा। उसको अब अपनी जान के लाले पड़ रहे थे। कुछ देर बाद दार्शनिक ने उसे खींचकर नाव में चढ़ा लिया। अब वह कुत्ता चुपके से जाकर एक कोने में बैठ गया। नाव के यात्रियों के साथ बादशाह को भी उस कुत्ते के बदले व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य हुआ।

बादशाह ने दार्शनिक से पूछा– "यह पहले तो उछल–कूद और हरकतें कर रहा था, अब देखो कैसे यह पालतू बकरी की तरह बैठा है?" दार्शनिक बोला– "खुद तकलीफ का स्वाद चखे बिना किसी को दूसरे की विपत्ति का अहसास नहीं होता है। इस कुत्ते को जब मैंने पानी में फेंक दिया तो इसे पानी की ताकत और नाव की उपयोगिता समझ में आ गयी।"

बूझो तो जानें

1
बिना पैर मैं चलती रहती,
भूख प्यास को नित मैं सहती।
कोई मुझको देख न पाएँ,
नहीं चलूँ तो सब घबराएँ।।

2
खड़ा-खड़ा ही उम्र बिताता,
मिट्टी भीतर पाँव जमाता।
हवा, फूल, फल सबको देता,
नहीं किसी से कुछ भी लेता।।

3
मुझसे ही सब जीवन पाते,
माता कहकर प्रेम जताते।
गोल गेंद सी मेरी काया,
धूल मृदा ने मुझे सजाया।।

4
स्वादहीन हूँ, रंग निराला,
मेरे बिना न एक निवाला।
भाप बर्फ से मेरा नाता,
सबकी मैं तो प्यास बुझाता।।

5
सीना ताने खड़ा रहूँ मैं,
धूप, ठंड, बरसात सहूँ मैं।
तन में कंकड़, पत्थर, खाई,
दूर गगन मेरी ऊँचाई।।

कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा (छत्तीसगढ़)

हुमायूँ का मकबरा

बच्चो! भारत की राजधानी दिल्ली शताब्दियों से देश की राजधानी रही है। कहते हैं कि महाभारत काल में पांडवों ने एक नया नगर इन्द्रप्रस्थ बसाया था, जो कालांतर में दिल्ली कहलाया। पृथ्वीराज चौहान के समय से लेकर अन्तिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर तक दिल्ली देश का मुख्य शहर रहा है। इसलिए यहाँ पर अनेक खूबसूरत और कलात्मक इमारतों का निर्माण हुआ है। आप समझ गए होंगे कि हम आपको दिल्ली के किसी रमणीक स्थल की सैर कराने वाले हैं। जी हाँ, आज हम आपको लिए चलते हैं– निजामुद्दीन क्षेत्र में स्थित हुमायूँ के मकबरे की ओर।

यूनेस्को ने वर्ष 1993 में इस मकबरे को विश्व विरासत सूची में शामिल किया था। तब से भारत सरकार के पुरातत्व विभाग ने इसे संरक्षित और सौन्दर्यकृत करने के अनेक प्रयास किये हैं। इस मकबरे का निर्माण हुमायूँ की विधवा बेगम हमीदा बानू ने करवाया था। 1562 ई. में इसका निर्माण कार्य शुरू हुआ था। इसके परिसर में मुगल सम्राट हुमायूँ और अनेक राजसी लोगों की कब्रें हैं। यह भारत में चारबाग शैली का पहला नमूना है। आगे चलकर इसी शैली में ताजमहल बनाया गया। इस भव्य इमारत के वास्तुकार सैय्यद मुबारक इब्न मिराक घियाथुद्दीन और उसके पिता मुबारक घियाथुद्दीन थे जिन्हें हेरात, अफगानिस्तान से बुलाया गया था। मुख्य इमारत लगभग आठ वर्षों में बनकर तैयार हुई।

इस इमारत में लाल बलुआ पत्थर, उसके ऊपर महीन पच्चीकारी, फर्श की सतह, झरोखों की जालियों, द्वारों, चौखटों और छज्जों पर सफेद संगमरमर का प्रयोग किया गया है। मुख्य इमारत 154 फीट ऊँची और 300 फीट चौड़ी है। गुम्बद के ऊपर 6 मीटर ऊँचा पीतल का किरीट कलश स्थापित किया गया है। उसके ऊपर चन्द्रमा की आकृति अंकित है। इस स्मारक की परिधि 30 एकड़ परिक्षेत्र में फैली हुई है। इसके अन्दर बहुत से बाग–बगीचे और झरने हैं। तो आप जब भी दिल्ली घूमने आयें तो हुमायूँ का मकबरा देखने जरूर जाएँ।

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
नई दिल्ली

नन्हे हाथों की कलाकारी

संजना

गौरी कुमारी

पारू कुमारी

पहुआ कुमारी

किंजल कुमारी

बनिया कुमारी

पानेरी कुमारी

अतुल कुमार

कोमल कुमारी

सिवानी

सुनिता

भावना कोटेड़

सामग्री सौजन्य : आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक पिंडवाड़ा (सिरोही)

श्रेष्ठ जीवन की ओर

डॉ. मीरा रामनिवास वर्मा, गांधीनगर (गुजरात)

मोहक घर से दूर छात्रावास में रहते हुए पढ़ रहा था। शुरू में वह उदास रहता था लेकिन समय ने दूसरे बच्चों संग रहना सिखा दिया। जल्द ही वह हमउम्र बच्चों संग घुल–मिल गया। वह माँ को चिट्ठी लिखता जिसमें सप्ताह भर की सभी बातें लिखता। माँ उसे जवाब में पत्र लिखती। इस बार माँ ने पत्र में लिखा–

प्रिय बेटे मोहक!

सदा खुश रहो। आशा है तुम कुशल होंगे। अपनी पढ़ाई पूरी मेहनत से कर रहे होंगे। मैं, तुम्हारे पापा और बहन उमा सकुशल हैं। आज उमा ने तुम्हारी पसन्द के छोले–भटूरे बनवाये हैं। खाने बैठे तो तुम्हारी याद आ गई। तुम्हारे पत्र से ज्ञात हुआ कि मैस में खाना अच्छा बन रहा है, जानकर दिल को तसल्ली हुई। अपनी सेहत का ध्यान रखना बेटा! मुझे तुम्हारी चिन्ता रहती है।

सालाना परीक्षा नजदीक है। मेहनत से तैयारी करना। उमा तो तुम्हारी छुट्टियाँ होने के दिन गिनती रहती है। तुम्हारे पापा अगले हफ्ते तुमसे मिलने आ रहे हैं। नाश्ते के लिए लड्डू, मठरी, शकरपारे भेज रही हूँ। दोस्तों संग मिल बाँटकर खाना। मैंने कल एक जगह पढ़ा– सफलता के लिए संकल्प जरूरी है। क्या तुम जानते हो संकल्प क्या होता है?

किसी उद्देश्य या कार्य के प्रति दृढ़ निश्चय करना या दृढ़ इच्छा–शक्ति रखना ही संकल्प है। संकल्प हमारे जीवन को दिशा प्रदान करते हैं। दृढ़ निश्चय हमारे जीवन में बदलाव लाते हैं। जैसा हम संकल्प करते हैं, हम इच्छा रखते हैं और जैसा हम सोचने लगते हैं, वैसे ही बनते चले जाते हैं।

महाभारत में कहा गया है– "जो व्यक्ति जैसी इच्छा रखता है, वैसा ही बनता जाता है"। यदि कोई बालक संकल्प या दृढ़ निश्चय करता है कि "मैं अपने आचार–विचार श्रेष्ठ रखूँगा, अच्छा इनसान बनूँगा" तो निःसंदेह ही वह अच्छा इनसान बन जाता है क्योंकि वह अपने संकल्प अनुसार अपने कार्य और व्यवहार को सदा अच्छा बनाये रखने का प्रयास करता रहता है।

हमारे प्राचीनतम ग्रंथ वेदों में सदा शुभ संकल्प करने की कामना की है। मन से सदा शुभ संकल्प करना चाहिए। शुभ संकल्प से हम शुभ कार्य करने लगते हैं जिससे शुभ परिणाम मिलते हैं। उदाहरण के तौर पर यदि हम हर सुबह कामना करते और संकल्प लेते हैं कि हमारी बुद्धि प्रखर बने, हमारा जीवन श्रेष्ठ बने, हम खुद खुश रहें व दूसरों को भी कोई कष्ट नहीं दें, या हर दिन ईश्वर से सही मार्ग पर ले जाने और बुद्धिमान होने की प्रार्थना करें तो सकारात्मक परिणाम मिलते हैं।

अतः मेरी इच्छा है कि तुम सदा शुभ संकल्प लिया करो। आशा है तुम्हें मेरी ये बातें अच्छी लगी होंगी। सदा अपने लिए और दूसरों के लिए शुभ सोचोगे, शुभ बोलोगे और शुभ करोगे। अपने दोस्तों को भी ये पत्र पढ़कर सुनाना।

प्यार सहित,

तुम्हारी माँ

रंग भरो प्रतियोगिता

इस चित्र में रंग भरकर इसका फोटो मो.नं. 9351552651 पर 28 फरवरी तक भेजें। श्रेष्ठ तीन चित्रांकन प्रकाशित एवं पुरस्कृत होंगे।

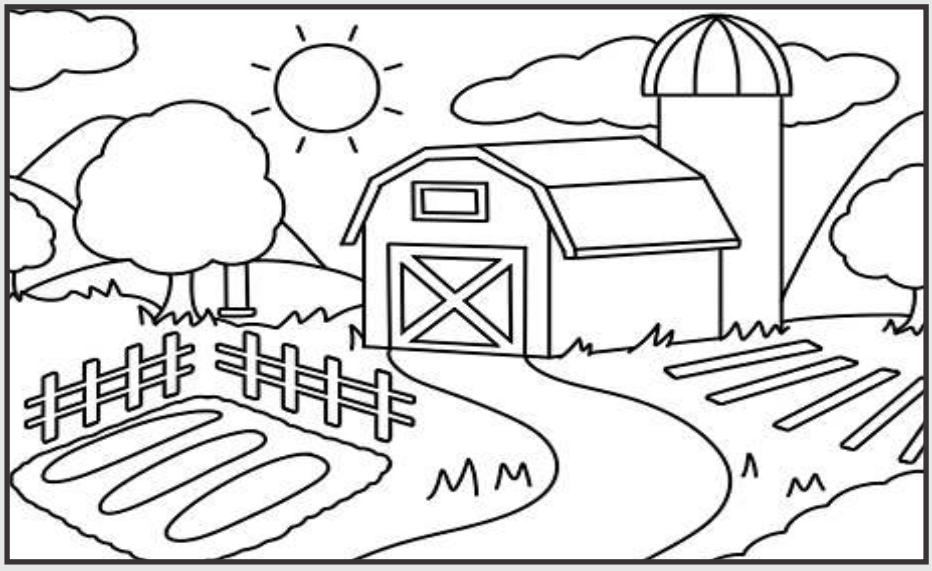

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) अमेरिका (ब) आस्ट्रेलिया (स) इटली (द) जर्मनी (2) वेटिकन सिटी (3) कनाड़ा (4) ग्रीनलैंड (5) उत्तरी अफ्रीका (6) इजराइल व जोर्डन (7) सुन्दर वन (प.बंगाल, भारत) (8) एंजल फाल्स, वेनेजुएला (9) जापान (10) कुवैत

अन्तर ढूँढ़िए

(1) आसमान में एक बादल गायब (2) गमले का आकार छोटा (3) लड़की का एक कान गायब (4) पेड़ का रंग अलग (5) जमीन पर पेड़ की पत्ती अतिरिक्त (6) लड़की के टी–शर्ट का रंग अलग (7) एक फूल अतिरिक्त (8) टोकरी में रखे हुए एक आम की दिशा अलग

दिमागी कसरत

(1) J (2) N (3) O (4) F (5) B (6) H (7) Q (8) C (9) A (10) M (11) D (12) P (13) E (14) K (15) R (16) I (17) G (18) L

बूझो तो जानें

(1) हवा (2) पेड़ (3) पृथ्वी (4) पानी (5) पर्वत

वर्ग पहेली

1 ली	2 प	3 ना	4 पो	त	5 ना	■	6 अ	
7 प	र	म	ल	■	8 बा	9 द	ल	
ई	■	■	■	10 अ	द	र	क	
11 य	ज्ञ	12 में	ड	प	■	■	■	बी
र	■	ग	■	13 ना	14 ग	15 वा	र	
■	16 भा	ल	■	17 प	र	त	■	
18 शा	■	19 गा	य	न	■	20 रो	21 ज	
22 म	न	न	■	■	23 अ	ग	र	

सुडोकू

9	5	7	6	1	3	2	8	4
4	8	3	2	5	7	1	9	6
6	1	2	8	4	9	5	3	7
1	7	8	3	6	4	9	5	2
5	2	4	9	7	1	3	6	8
3	6	9	5	2	8	7	4	1
8	4	5	7	9	2	6	1	3
2	9	1	4	3	6	8	7	5
7	3	6	1	8	5	4	2	9

Moral Story

The Travelers & the Purse

Two men were traveling together along the road when one of them saw a purse lying on the roadside. He picked up that well-filled purse.

"How lucky I am!" he said. "I have found a purse. Judging by its weight it must be full of gold."

"Do not say 'I have found a purse,'" said his companion. "Say rather 'we have found a purse' and 'how lucky we are.' Travelers ought to share alike the fortunes or misfortunes in the journey."

"No, no," replied the other angrily. "I found it and I am going to keep it."

Just then they heard a shout of "Stop, thief!" and looking around, saw a mob of people armed with swords coming down the road.

The man who had found the purse fell into a panic. "We are lost if they find the purse with us," he cried.

"No, no," replied the other, "You would not say 'we' before, so now stick to your 'I'. Say 'I am lost."

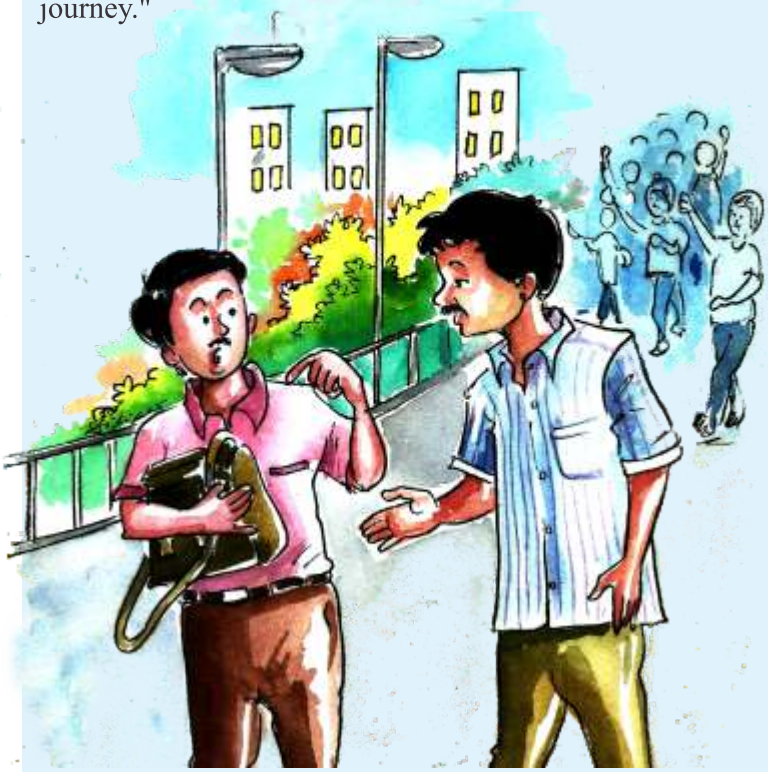

Moral

We cannot expect any one to share our misfortunes unless we are willing to share our good fortune also.

Tale of a Squirrel and a Cat

Nunu, the 6 years old boy asked his mother, "Tell me a story mama"

His mother, Tamna replied, "Nunu! I am very tired tonight due to the office and household work after the office! I will tell you a story tomorrow, dear!"

Nunu got upset and in a low voice, he said, "But you said the same thing last night also, mama!" Then, in his innocent voice, Nunu asked her mother, "Why do you always work mama? You work all the time. That's why you get tired every day!"

Stroking the head of her child, Tamna said softly, "My dear! We have to work hard in life for survival!"

Nunu said innocently, "I don't work like you or papa but I am surviving."

Tamna smiled and said, "Because, you are a child now, my dear. We are working for you too! When you grow up and have your own family, you will do the same for your family."

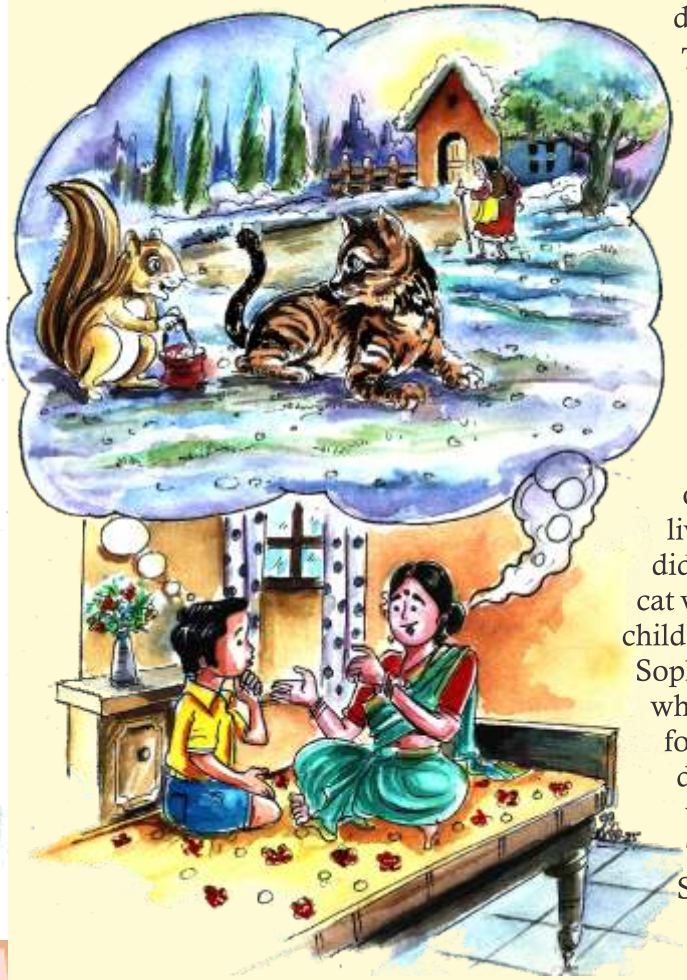

Tamna continued, "Okay! I will tell you a tale of a Squirrel and a Cat, tonight." Tamna could see the excitement and joy in her child's face the moment he heard that his mother was going to tell a story.

Then, Tamna started telling...

Long, long ago, in a small of town of England, there lived an old woman who didn't have anyone but only a cat which she loved like her own child. The woman's name was Sophia. She had a little cottage where the town ended and the forest began. Her husband died many years ago and left the house and a farm for her.

The woman named the cat Snow because it was as white as snow. Snow was a fat cat who spent most of her time

either on Sophia's bed or near the fireplace. Sophia never ate a single meal without feeding her cat 'Snow' first. Sophia's love and care made Snow proud and lazy though. Snow didn't even want to catch mice like other cats. There was also a squirrel who lived in the tree of the old women's garden. The squirrel was always busy in search of its food in the garden.

One Autumn afternoon, Snow was lying lazily in the garden after lunch while the squirrel was busy searching for food. Snow asked the Squirrel, "Why are you always in a hurry Mr Squirrel?"

The squirrel replied, "Because I have to search for my own food. Moreover, the winter is coming and I have to store food for the winter too."

Snow asked sarcastically, "Oh! Is it?" Before the squirrel say anything, Snow proudly said, "Oh! poor soul! Look at me! I don't have to worry about either winter or summer. I can enjoy every season with delicious foods. If you want, I can share some food with you every day. My lady has more than enough for the three of us."

The squirrel replied politely, "Thank you for your generosity but I would prefer to search for my own food than to depend on someone else!"

The cat said arrogantly, "Oh! If you don't want to taste the lavish life, what can I do!" By saying that the cat fell asleep on the velvety grass of the old woman's Garden. But the squirrel was still collecting its food.

A few days after Christmas, Sophia died leaving Snow alone. After her death, Snow lived a miserable life. Nobody was there to feed her everyday like Sophia. And the houses and streets were covered with snow and people lived indoors most of the time. Whenever Snow tried to enter someone's house in the town, people always frightened her. Sometimes Snow managed to steal food from someone's kitchen or from the storage of a shop but some days Snow had to sleep with an empty stomach.

When the spring came, again the Earth was covered with green grass and the Sun was peeping between the leaves of the trees. One day, Snow met the same squirrel she met a few months ago.

Snow said, "Hello! Mr Squirrel!"

The squirrel replied, "Oh Hi! I didn't recognise you because you look totally different and bony today!" "What happened to you?' asked the Squirrel.

Snow replied in a gentle voice, "My owner died last winter. Last winter was the hardest time for me."

The squirrel understood and said, "Oh! I see! Take care of yourself".

Snow said, "Thank you! You too take care! " Then, Snow went inside the house, where the old woman used to live. The cat had learnt it's lessons. No more, Snow was a lazy cat.

"That's the end of the story my boy!' said Tamna. Nunu was already feeling sleepy holding her mother's hand. Tamna kissed his forehead and said, "Goodnight and sweet dreams darling!"

Misna Chanu
Gurugram (Haryana)

The Champion

You've fallen to your lowest,
You don't feel like getting up,
You want them to know,
That you're all used up.

Sadness turns to anger,
Anger is your fuel,
You don't let it take control,
Now you're ready to duel.

You're unstoppable now,
Enemies faint at your name,
You're still the Robin Hood,
For those without pennies and fame.

You are the champion,
Of all the champions we know,
But you still be unspoken of,
Even to the front rows.

Working like a shadow,
No recognition to bask,
You will be the hero,
That hides behind a mask.

But you don't hide because,
You've been ashamed,
You hide because you're motive,
It isn't pennies and fame.

You're selfless, kind,
Grateful for what you have, today,
You make sure to see,
That all people have a say.

You're the champion,
That soon, everyone will adore,
But it's not because you're selfish,
It's your warmth that soars.

The power that you have,
You use it to assure,
The rich and mighty open their eyes,
To how others treat the weak and poor.

So let's all become the champions,
To brighten up someone's life,
Be it someone you'll never know,
You can still get rid of all their strife!

Tanvi Kundra (13 Yrs.)
Mumbai (Maharashtra)

Science of Living
Emotions

जीवन विज्ञान
स्वस्थ समाज की संरचना

Q. Which mood is not good?

Stubborness is not good. One should accept good advice.

Q. Which feeling is not good?

Jealous feeling is not good. One should be generous.

Q. Which action is not good?

Scrambling for things is not good. One should feel happy when other person also gets the same.

Q. Which attitude is good?

One should beg excuse for the mistake committed. One should not repeat the mistake.

Q. Which behaviour is good?

A friendly behaviour is good. It is not good to quarrel among our-

Birthday Greetings

February 02

Ojasvi
Amethi (U.P.)

February 06

Ayana Omar
Rajkot (Gujarat)

February 15

Iyaan Kavadia
Bhilwara (Raj.)

February 17

Jainika Maru
Bhilwara (Raj.)

ALL ABOUT BATS

Can you think of something that flies but does not build nests? And it does not lay eggs either. People sometimes mistake it for a bird but actually it's a mammal. It's a bat!

You find bats everywhere, especially in tropical countries. They often huddle together in old, dark and damp buildings such as old, empty houses and historical sites and caves. As you step inside, a musty smell hits your nostrils and you hear the sudden flapping of wings. Then you see them fluttering over you.

Most bats live on insects. The Mexican bats of Texas eat up nearly 20,000 tons of insects every year. There are other bats which live on fruits, honey and pollen from flowers. The fruit bats of Seychelles do it and are quite colourful .

Bats roost during the day and go hunting for food at night. They do not build nests but sleep in caves, holes, hollows of trees, animal burrows, empty buildings and such places. They usually like to live in huge groups or colonies.

Bats come in all sizes. The flying fox could be five feet long from one wingtip to another and weigh more than a kilo. The tiny Philippine bamboo bat is barely six inches long and weighs only a few grams.

Most bats have just one baby at a time. There are some special kind of bats where the mother-bats fly away to special "nursery roosts" before the young ones are born and live in a large group of mothers-to-be. These are usually located in places that get a lot of sunlight. After the young ones are born they live on milk. When they are a little older the mother bats go out to find other food for them. Some bats carry their young ones when they go out. Others leave them in the nursery. At times there are hundreds of young ones waiting for their meals. Scientists call this the "milk herd system".

Different kinds of bats have their own way of flying. But all of them fly in a straight line unless something comes in the way. When a bat flies it makes a sound that people cannot hear. The sound makes waves that knock against the objects in their path creating an echo which the bat can hear. This echo tells them what lies ahead. It could be an enemy or something to eat! You must have heard the term "blind as a bat". But it is not strictly true. Although they cannot see clearly, bats can make out if it is night or day.

I'm sure you know that bats form an important part of wildlife.

Swapna Dutta
Bangalore (Karnataka)

But Why?

1 Why do birds sing?

Birds sing to talk to each other. They might sing to say "Hello!" or to find a friend. Sometimes, they sing just because they're happy, just like how we hum or sing when we're having fun!

2 Why do we have rainbows?

Rainbows happen when the sun shines through tiny drops of water in the sky, like after it rains. The sunlight splits into beautiful colors, making a rainbow. It's like nature's way of painting the sky!

3 Why do we brush our teeth?

We brush our teeth to keep them clean and healthy. If we don't brush, tiny germs can make holes in our teeth. Brushing helps us keep our smiles bright and strong!

4 Why do we need to sleep?

We need to sleep to give our bodies and brains a rest. When we sleep, our bodies grow, and our brains get ready to learn new things. It's like recharging a toy so it can play again the next day!

5 Why do leaves change colour in the fall?

Leaves change color because the weather gets cooler, and the trees start to rest. The green color fades, and we see beautiful red, orange, and yellow colors. It's like the trees are putting on a colorful show before winter!

GOOD FARMER

Once, there was a kind farmer. One day, while feeling very hungry, he found a shiny golden fruit under a tree. After eating the fruit, he saw a golden seed inside. He was amazed! He showed it to a goldsmith and asked, "Is this real gold?" The goldsmith said, "Yes, this is real gold, very precious!" The farmer was so happy.

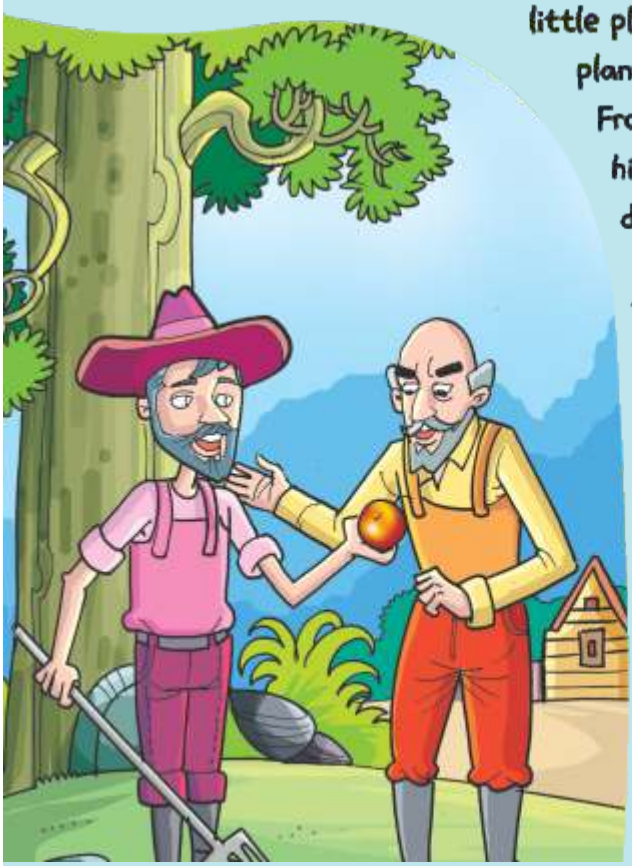

He went home and planted the seed. Soon, a little plant grew. One day, the plant gave him a golden fruit. From then on, the plant gave him one golden fruit every day.

The farmer had a friend. He told his friend about the golden fruit. The friend said, "Give the plant more water and food, and it will grow more golden fruits." The farmer replied, "Okay, I will." But then he thought, "The tree gives me enough. Why do I need more?"

One night, the farmer had a dream. The plant said, "You are a good farmer and not greedy. From now on, I will give you two golden fruits every day."

The next day, the plant gave him two golden fruits. The farmer was very happy. He thought, "Why do I need so many fruits?" So, he sold the extra fruit and used the money to help poor people. The plant kept giving more fruits, but the farmer never kept them for himself. He helped others and lived happily ever after.

Be happy with what you have and share with others. Sharing makes everyone happy!

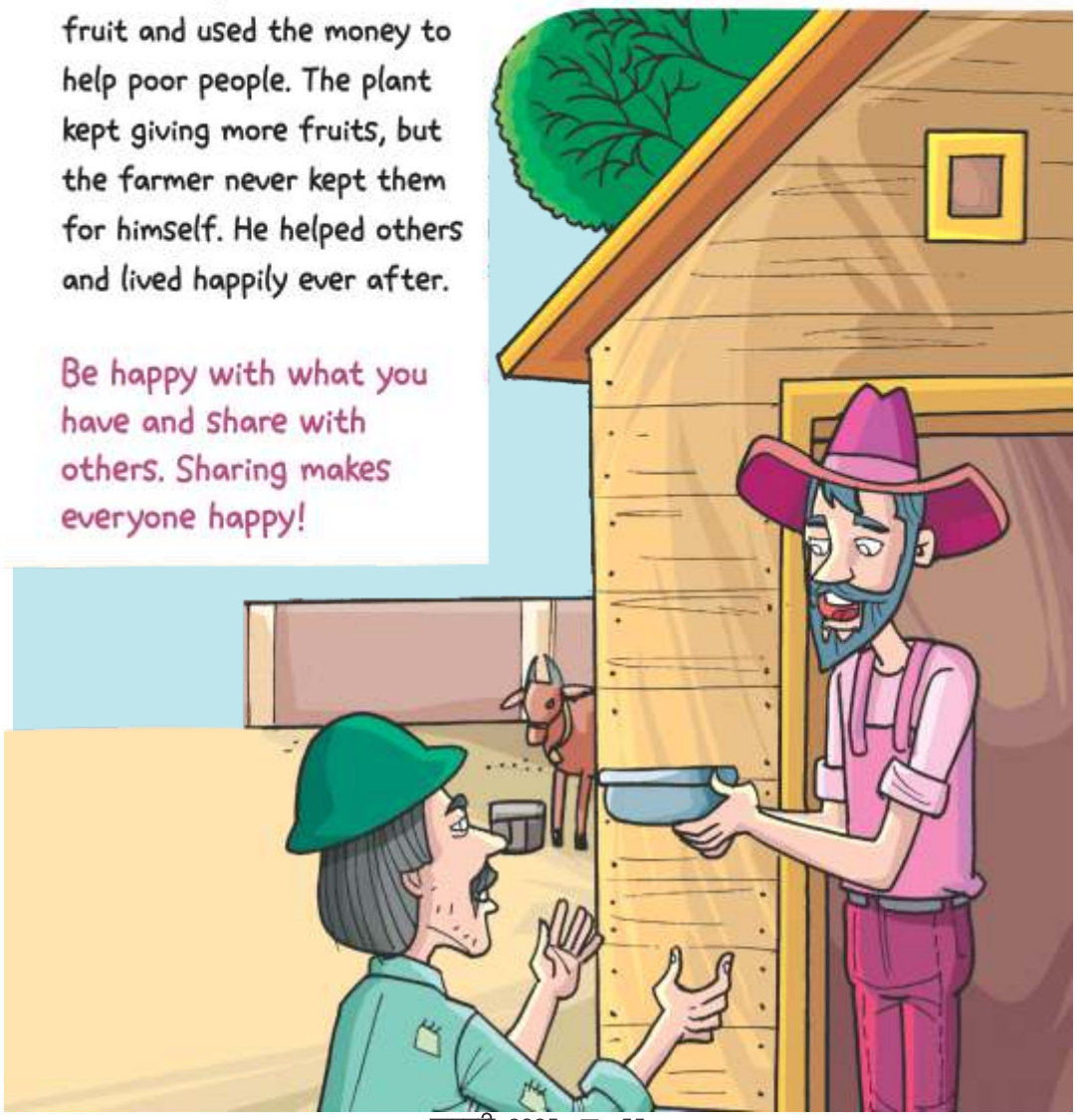

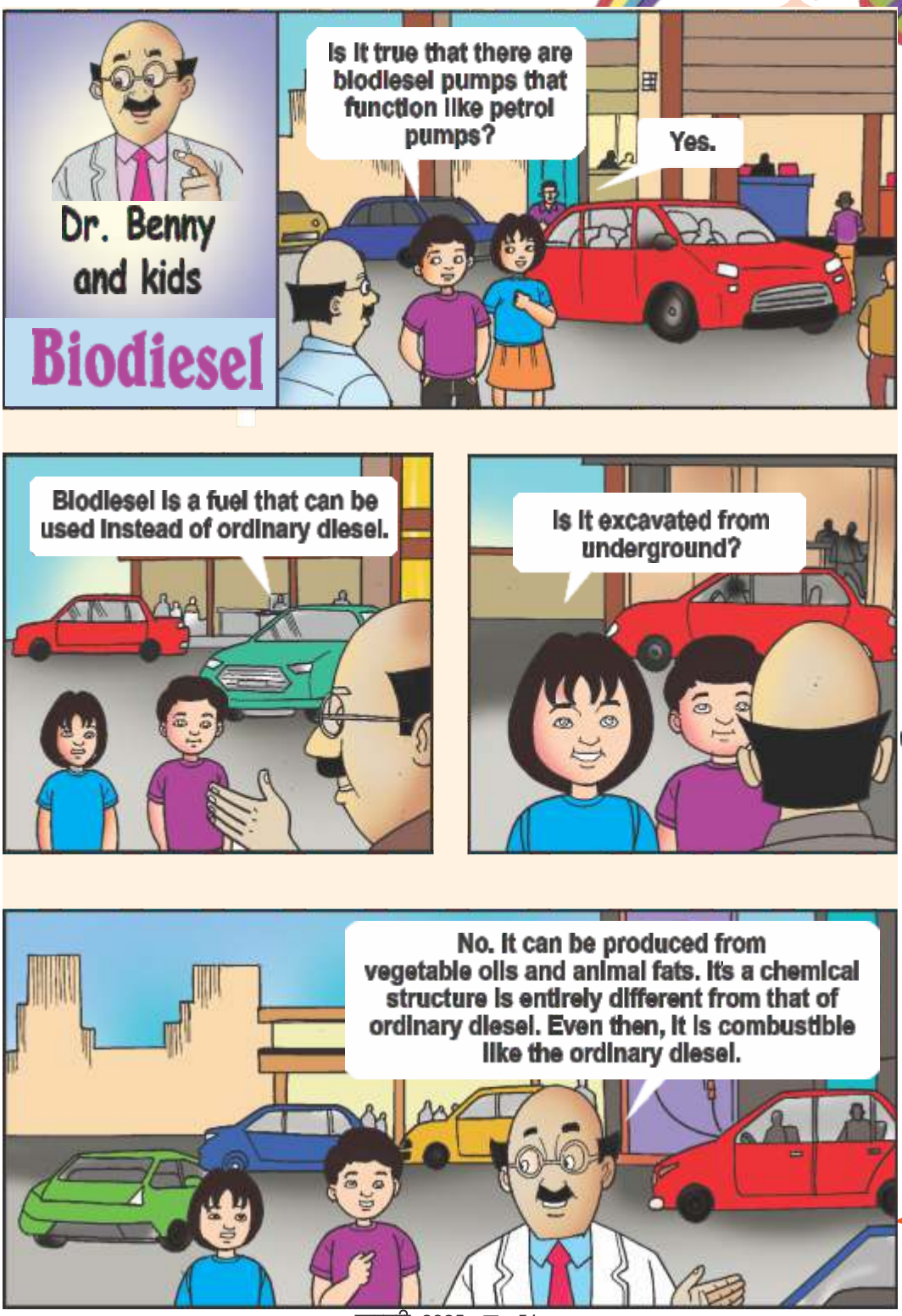
Dr. Benny and kids
Biodiesel
Is it true that there are biodiesel pumps that function like petrol pumps?
Yes.
Biodiesel is a fuel that can be used instead of ordinary diesel.
Is it excavated from underground?
No. It can be produced from vegetable oils and animal fats. Its a chemical structure is entirely different from that of ordinary diesel. Even then, it is combustible like the ordinary diesel.

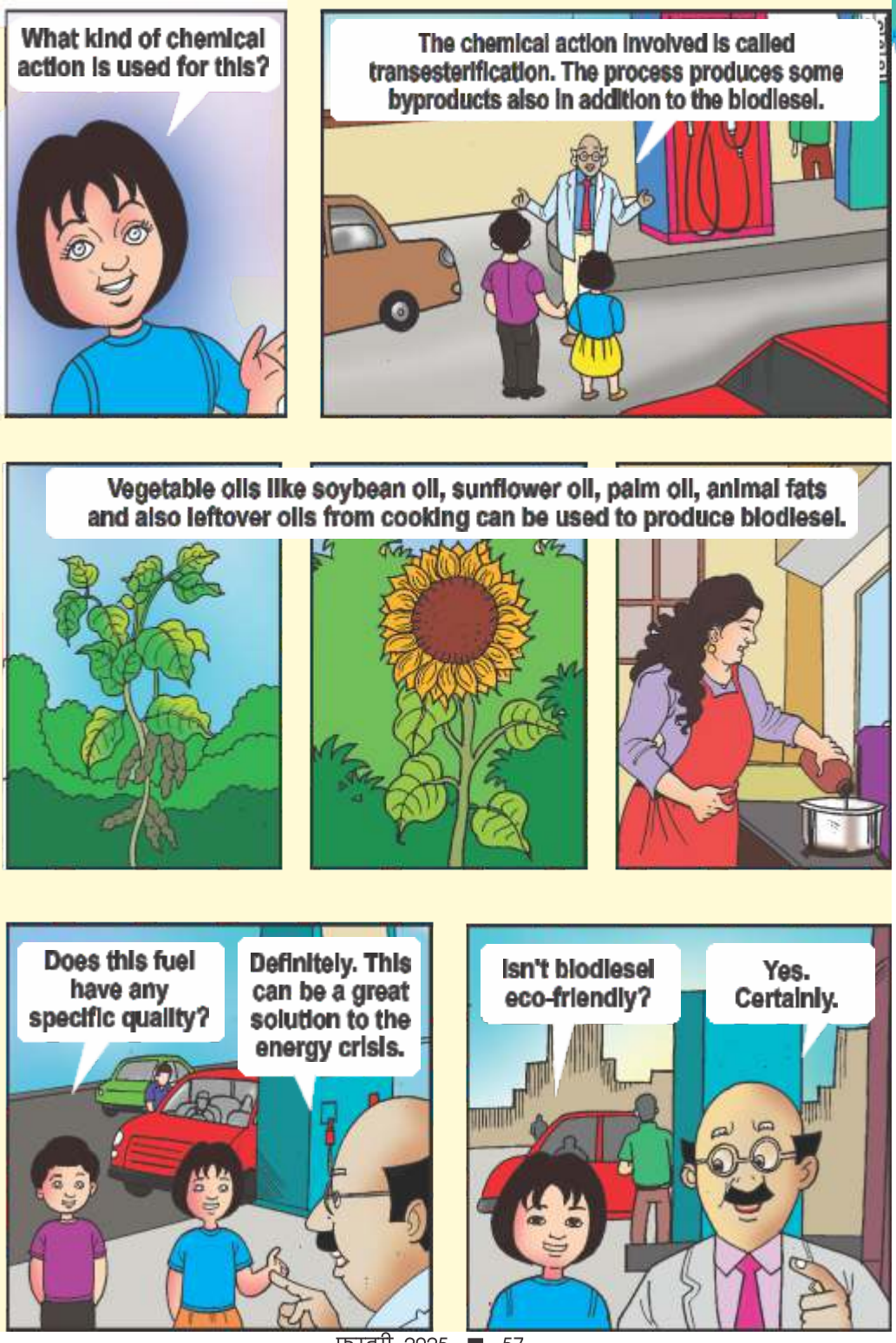
What kind of chemical action is used for this?
The chemical action involved is called transesterification. The process produces some byproducts also in addition to the biodiesel.
Vegetable oils like soybean oil, sunflower oil, palm oil, animal fats and also leftover oils from cooking can be used to produce biodiesel.
Does this fuel have any specific quality?
Definitely. This can be a great solution to the energy crisis.
Isn't biodiesel eco-friendly?
Yes. Certainly.

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai • Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुव्रत

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान

ANUVRAT CREATIVITY CONTEST 2024

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2024

आयोजक :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

DRAWING : 1st WINNER
VAIBHAV BHARDWAJ

Group B : (Class 9-12)
SHREE SANATAM DHARAM PUBLIC SCHOOL
KAUSHALPURI, KANPUR

DRAWING : 2nd WINNER
SWAMI T.

Group B : (Class 9-12)
RAVI VARAMA ART
INSTITUTE, MYSORE

DRAWING : 3rd WINNER
BABULAL D.

Group B : (Class 9-12)
MOTILAL FOMRA SANATANA DHARMA HIGHER SEC.
SCHOOL, SOWCARPET,CHENNAI, T.N.

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2025-27
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

"लोगों के अच्छाई या बुराई करते रहने से व्यक्तिको कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए। उसे हमेशा न्याय के पथ पर ही चलना चाहिए। यही उसे आगे चलकर विजयी बनाएगा।

यदि आपने किसी कार्य का निश्चय किया है, तो उसे ठीक वक्त पर पूरा कर देना चाहिए, वरना लोगों का ही नहीं बल्कि आपका खुद से भी विश्वास उठ जाता है।"

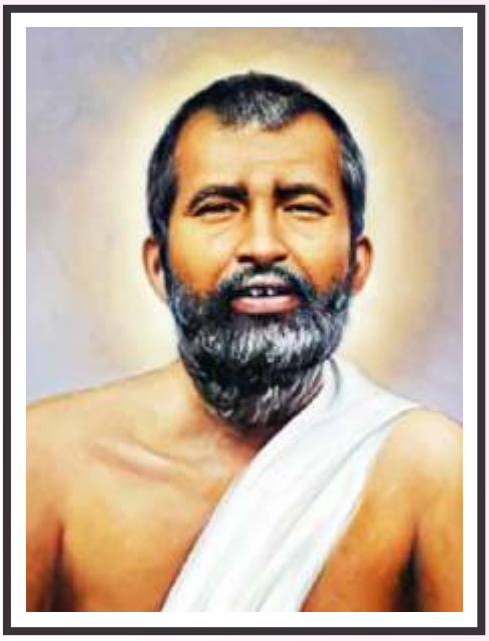

रामकृष्ण परमहंस

जन्म : 18 फरवरी 1836

निधन : 16 अगस्त 1886

रामकृष्ण परमहंस भारत के एक महान संत, आध्यात्मिक गुरु, उच्चकोटि के साधक एवं विचारक थे। इन्होंने सभी धर्मों की एकता पर जोर दिया। सेवा पथ को ईश्वर की पूजा मानकर आप अनेकता में एकता का दर्शन करते थे। आपने कठोर साधना और भक्ति का जीवन बिताया। आप छोटी कहानियों के माध्यम से लोगों को शिक्षा देते थे। आपके आध्यात्मिक आन्दोलन ने परोक्ष रूप से देश में राष्ट्रवाद की भावना बढ़ाने का काम किया। वे तपस्या, सत्संग और स्वाध्याय आदि आध्यात्मिक साधनों पर विशेष बल देते थे। आप स्वामी विवेकानंद के गुरु थे।